मितान

अंक 19
वर्ष -2025

दोस्ती को रिश्तेदारी में बदलने
की अटूट परंपरा

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी)
छत्तीसगढ़, रायपुर

कार्यालय महालेखाकार
(लेखापरीक्षा)
छत्तीसगढ़, रायपुर

नराकास रायपुर द्वारा राजभाषा प्रेरणा पुरस्कार

पुरस्कार ग्रहण करते हुए कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) के उपमहालेखाकार - श्री वी. यू. पाटिल

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

मितान

2025

उन्नीसवां संस्करण

हिन्दी वार्षिक पत्रिका

स्वत्वाधिकार एवं प्रकाशन

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

छत्तीसगढ़- रायपुर

जीरो पाईंट, बलौदा बाजार रोड,

पिन कोड - 492005

ऑडिट सप्ताह 2024

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

मितान परिवार

संरक्षक

श्री यशवंत कुमार
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
छत्तीसगढ़, रायपुर

अध्यक्ष

मो. फैज़ान नैय्यर
महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
छत्तीसगढ़, रायपुर

परामर्शदात्री समिति

श्रीमती प्रियाति कौड़ो
वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)

श्री एम. एस. डहरिया
वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)

श्रीमती जी. एझिलरसी
उपमहालेखाकार (पेंशन एवं निधि)

श्री नितिन गंगाधर पुके
उपमहालेखाकार (एएमजी-1)

संपादक

श्री यशवंत वर्मा
सहायक निदेशक (राजभाषा)

सह संपादक

श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती दिव्या साहू
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री सौरिश राय
कनिष्ठ अनुवादक

श्री शिव शंकर गोड़
कनिष्ठ अनुवादक

श्रीमती सरस्वती भगत
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

हिन्दी पखवाड़ा 2024

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संरक्षक का संदेश

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में कार्यालयीन हिंदी गृह पत्रिका 'मितान' के 19वें अंक का प्रकाशन मेरे लिए अत्यंत हर्ष का विषय है।

विभिन्न स्तरों पर अपनी महत्ता सिद्ध कर चुकी राजभाषा हिंदी हमें अपनी संस्कृति एवं राष्ट्रीयता से बांधे रखती है। हिन्दी भाषा, संस्कारों की भाषा संस्कृत से उपजी है इसलिए इनका व्याकरण एवं अभिव्यक्ति अन्य भाषाओं से व्यापक एवं वैज्ञानिक है। दीर्घ काल से यह हमारे संचार का माध्यम होने के साथ साथ देश की आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक एकता-अखंडता का प्रतीक है। आज एक ओर दैनिक व प्रशासनिक कार्यों में हिंदी की वृद्धि कर राजभाषा के प्रति सम्मान स्थापित करना तो दूसरी ओर साहित्यिक,सांस्कृतिक एवं तकनीकी गतिविधियों को बढ़ावा देना हमारा उद्देश्य भी होना चाहिए और नैतिक दायित्व भी। उम्मीद है कि इस कसौटी पर पत्रिका 'मितान' का 19वां अंक एक सार्थक प्रयास के रूप में खरा उतरेगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन पर रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को बधाई सहित 'मितान' पत्रिका के प्रगति पथ पर अनवरत् यात्रा के लिए मेरी शुभकामनाएं सदैव बनी रहेगी। मेरा विश्वास है कि इसमें समाहित रचनाओं की गुणवत्ता से पत्रिका 'मितान'का प्रकाशन हिंदी के प्रयोग- प्रसार के लिए उपयोगी साबित होगा।

धन्यवाद..!

य. कुमार

यशवंत कुमार
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
छत्तीसगढ़, रायपुर

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2024

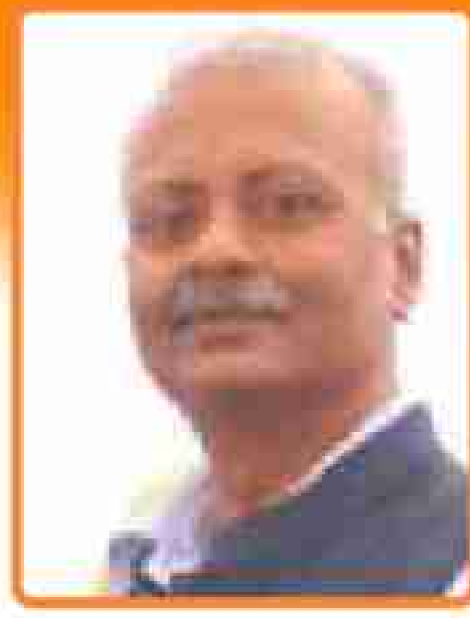

अध्यक्ष का संदेश

हर्ष का विषय है कि हमारे विभाग की वार्षिक हिंदी पत्रिका 'मितान' का यह नवीनांक प्रकाशित हो रहा है। यह पत्रिका न केवल हमारे विभाग की रचनात्मक अभिव्यक्तियों का मंच है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक, भाषायी और सामाजिक प्रतिबद्धता का भी प्रतीक है। हिंदी भाषा हमारे देश की आत्मा है। यह न केवल संवाद का माध्यम है, बल्कि विचारों, मूल्यों और संवेदनाओं को जोड़ने वाली कड़ी भी है। 'मितान' के माध्यम से हमें यह अवसर मिलता है कि हम अपने अनुभव, विचार, लेखन-शक्ति और सृजनशीलता को साझा कर सकें। हिंदी हमारी राजभाषा के साथ भावों की भी भाषा है जो संवेदनाओं को जोड़ती है और आत्मीयता का विस्तार करती है। ऐसे प्रयासों के माध्यम से हम न केवल अपने दायित्वों का निर्वहन करते हैं, बल्कि अपनी सांस्कृतिक विरासत को भी सहेजते और आगे बढ़ाते हैं।

मैं इस अंक में सहयोग देने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने अपने लेख, कविताएं, संस्मरण तथा अन्य रचनात्मक प्रस्तुतियों के माध्यम से पत्रिका को समृद्ध किया है। संपादन समिति विशेष रूप से प्रशंसा के पात्र है, जिनके प्रयासों से यह अंक साकार हो सका है। यह पत्रिका केवल एक साहित्यिक मंच नहीं, बल्कि हमारे विभागीय परिवार की सृजनात्मक ऊर्जा, विचारशीलता और सांस्कृतिक विविधता का सुंदर प्रतीक है। 'मितान' के माध्यम से न केवल हमें अपनी भाषा में अभिव्यक्त होने का अवसर प्राप्त होता है, बल्कि आपसी संवाद, सहयोग और सृजनशीलता को भी नया आयाम मिलता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि मितान का यह संस्करण पाठकों के लिए न केवल मनोरंजक, बल्कि प्रेरणादायक भी सिद्ध होगा।

धन्यवाद..!

शुभकामनाओं सहित,

मो. फ़ैज़ान नैय्यर
महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
छत्तीसगढ़, रायपुर

26 जनवरी 2025

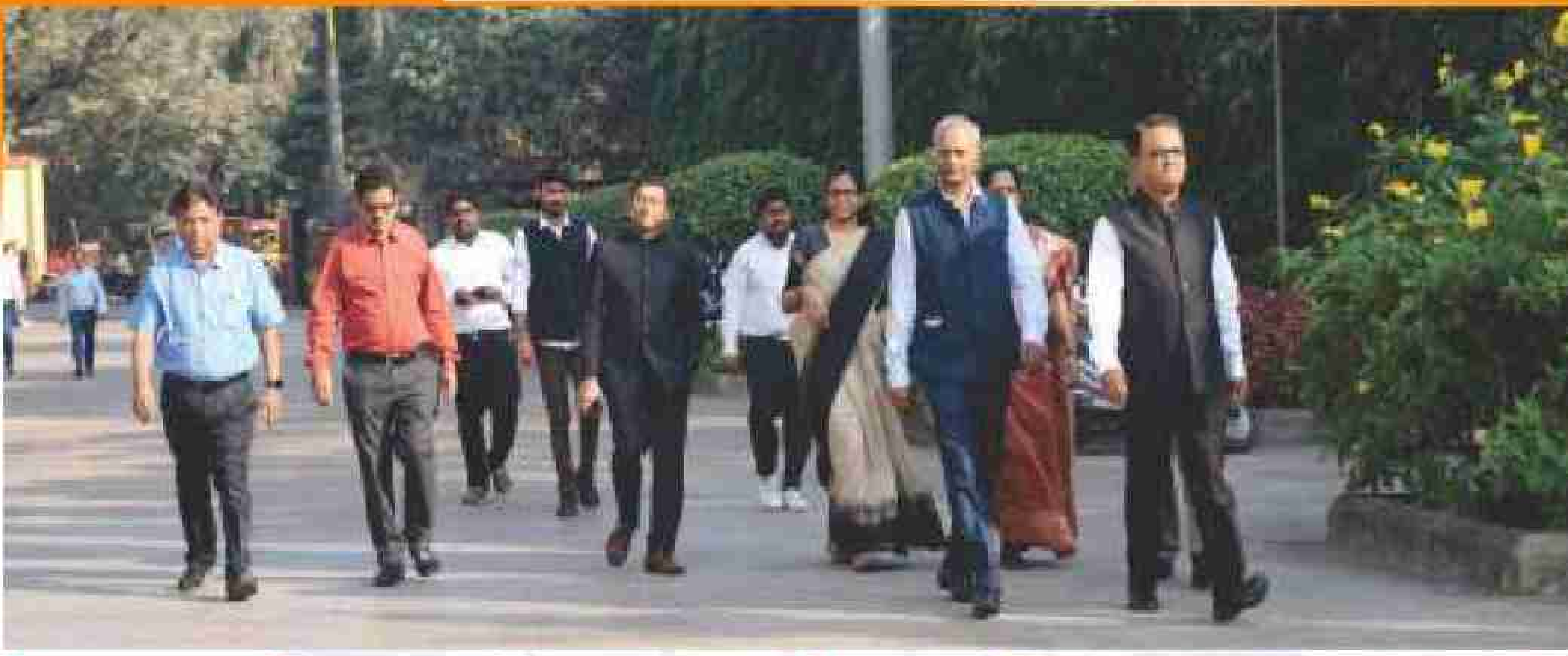

संपादकीय

छत्तीसगढ़ में 'मितान' एक मित्रवत संबंध ही नहीं बल्कि एक धर्म है, जिसमें अलग प्रकार के परंपरा व रीति रिवाज का निर्वहन किया जाता है। इस परंपरा में दो व्यक्ति एक दूसरे को जिंदगी भर मित्र मानते हुए सदैव मितान धर्म का पालन करने के लिए प्रतिज्ञा लेते है।'मितान' एक रिश्ता के साथ-साथ आस्था है जो छत्तीसगढ़ की अमूल्य विरासत है।

कार्यालय की यह पत्रिका 'मितान' भी इस कार्यालय की धरोहर की भांति है, जिसमें विभिन्न कार्यालयीन गतिविधियों के साथ-साथ कर्मियों के लेखन प्रतिभाओं को समुचित स्थान दिया जाता है। इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य राजभाषा के प्रयोग को प्रोत्साहन देते हुए पाठकगण में हिन्दी के प्रति प्रेम विकसित करना है। हिन्दी भाषा अन्य भाषाओं से सरल है और यह भी सत्य है कि 'सरल' बनना बहुत कठिन होता है। हिन्दी ने कई चुनौतियों को सहर्ष स्वीकारते हुए अपने प्रभुत्व को अधिक सुदृढ़ किया है। यह पत्रिका भी नित्य नये प्रयोगों को आत्मसात करती हुई कार्यालय की अभिव्यक्ति का एक माध्यम बन गई है।

अत्यंत हर्ष के साथ मैं, इस पत्रिका की 19वें संस्करण आपको इस आशा के साथ समर्पित करना चाहूंगा कि आपके बहुमूल्य सुझाव एवं प्रतिक्रिया प्रसाद स्वरुप प्राप्त होंगे।

अंत में 'मितान' परिवार के संरक्षक, अध्यक्ष तथा परामर्शदात्री समिति को उनके प्रेरणा तथा मार्गदर्शन के लिए साधूवाद देते हुए संपादक मंडल के समस्त सदस्य को आत्मिक बधाई प्रेषित करता हूं।

''विकसित भारत का हो सपना, हिन्दी भाषा हो अपना''

धन्यवाद..!

यशवंत वर्मा
सहायक निदेशक (राजभाषा)

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग,
पश्चिम क्षेत्रीय बेडमिंटन प्रतियोगिता 2024-25

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग,
पश्चिम क्षेत्रीय कैरम प्रतियोगिता 2024-25

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग, पश्चिम क्षेत्रीय फुटबॉल प्रतियोगिता 2024-25

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग, पश्चिम क्षेत्रीय हॉकी प्रतियोगिता 2024-25

नागपुर विजेता, रायपुर बना उपविजेता

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मनोरंजन क्लब द्वारा पारिवारिक टूर

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) के मनोरंजन क्लब द्वारा आयोजित विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियाँ

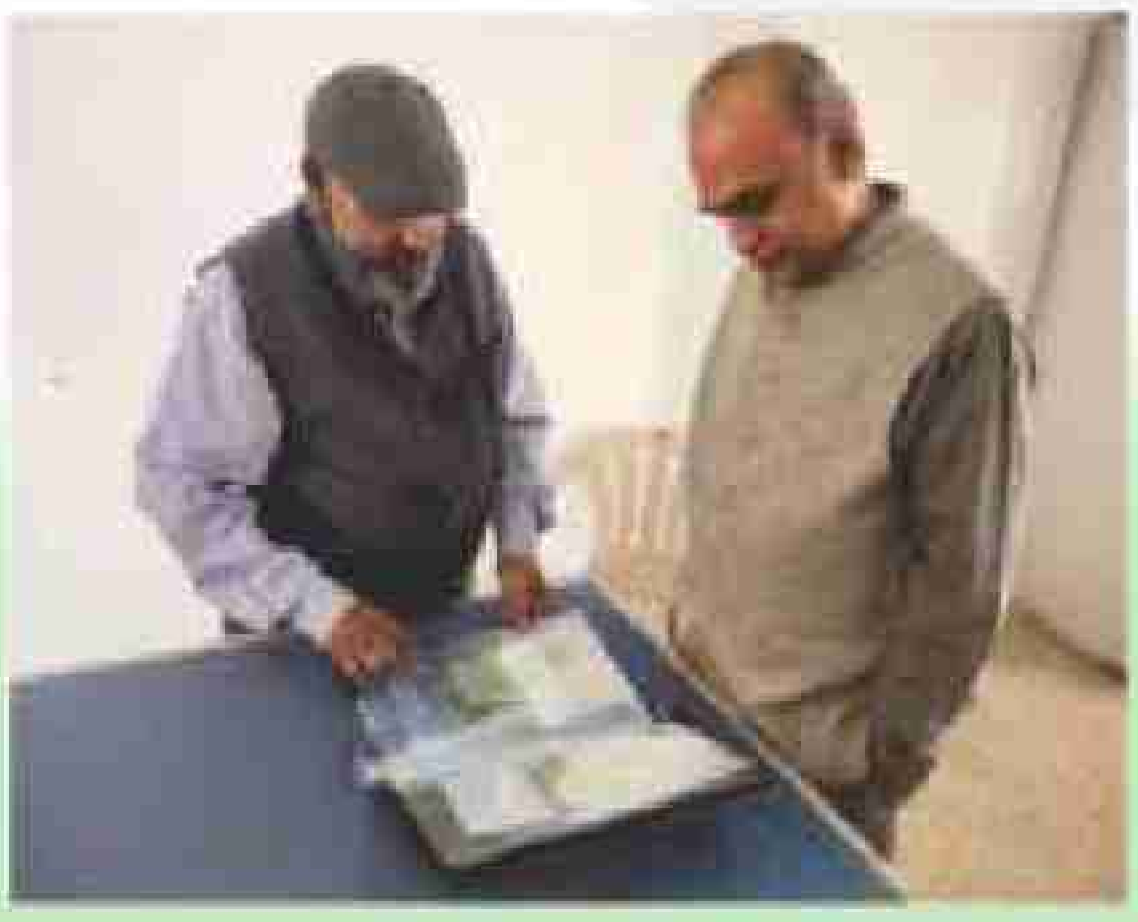

नराकास, रायपुर के तत्वाधान में कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) द्वारा आयोजित संयुक्त हिन्दी कार्यशाला

मितान 2025
उन्नीसवां संस्करण

अनुक्रमणिका

स. क्र.	शीर्षक	रचनाकार (सुश्री/श्री/श्रीमती)	पृष्ठ नं.
1	सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जयंती		1
2	मुंशी प्रेमचंद जयंती		2
3	मेरा प्यारा छत्तीसगढ़	डुमेश धनकर, लेखापरीक्षक	3-5
4	महाकुंभः संगम में डुबकी, कर्मों से मुक्ति	यशवंत वर्मा, सहायक निदेशक (रा.भा.)	6-8
5	चार दिन अस्पताल के..	अविनाश कुमार सिन्हा, सहा. लेखा अधिकारी	9-11
6	निश्चित ही जीतेंगे, जंग का सच	तेजेश सिंह नेगी, संभागीय लेखा अधिकारी	12
7	मानसून का अटकना, लटकना और भटकना	ऋषभ जैन, वरि. संभागीय लेखा अधिकारी	13
8	पहलगाम हमला एवं ऑपरेशन सिन्दूर	प्रेम प्रकाश यादव, लेखापाल	14-15
9	बनारस एक जीवंत शहर	पंकज कुमार पाठक, लेखापाल	16
10	एक कोशिश जो जिंदगी को छू गई	वशिष्ठ कुमार, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी	17
11	नमन तुझे माँ	यशेन्द्र गुप्ता, सहायक पर्यवेक्षक	18
12	मैं बड़ा होकर माँ जैसा बनना चाहता हूँ	चित्तापुरी आयुष राव, पिता- सी.कमलेश राव (सहा.लेखापरीक्षा अधिकारी)	19-20
13	अपना मजा है	सचिन, लेखापरीक्षक	21
14	आईने में, जिंदगी	हरेन्द्र कुमार पटनायक, सहायक पर्यवेक्षक	22
15	अद्भुत हिमाचल	दिव्या साहू, वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी	23-24
16	हिन्दी का प्रयोग करने में गौरव का अनुभव करें	जयदीप दहिया, डी. ई. ओ.	25
17	बीतता समय	शुभम प्रभात, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी	26
18	योग कर्मसु कौशलम्	के.पी.संतोष, पर्यवेक्षक	27
19	राम एक चरित्र है	सुजित कुमार मंडल, सहायक पर्यवेक्षक	28
20	भाषा बनाम भाषा	वेद प्रकाश यादव (भाई- प्रेम प्रकाश यादव, लेखापाल)	29-30
21	पिता एक वट वृक्ष	प्रोसेनजीत दास, लेखालिपिक	31
22	दिहाड़ी मजदूर	मोहम्मद जफर, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी	32-33
23	जिंदगी, माता-पिता	निशा ध्रुव, लेखापाल	34
24	खुशी की परिभाषा	सौरिश राय, कनिष्ठ अनुवादक	35
25	छोटे दीप बड़ी रोशनी	शुभम, लेखापरीक्षक	36
26	कार्यालय में रंगोली : एक जीवंत परंपरा	सरिता, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	37
27	आपके पत्र		40

अस्वीकरण :- पत्रिका में दिये गये लेखों की मौलिकता संबंधी जिम्मेदारी तथा उनके द्वारा व्यक्त विचार रचनाकारों के है। संपादक मंडली का सहमत होना आवश्यक नहीं

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जयंती

दिनांक 21.02.2025 को हिंदी के **महान कवि श्री सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'** जी की जंयती के अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) एवं कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) द्वारा संयुक्त रूप से प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.) महोदय श्री यशवंत कुमार की अध्यक्षता में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें सभी समूह अधिकारी तथा कार्यालय के अधिकारी कर्मचारी गण भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित श्रीमती नीलू मेघ, लेखिका एवं कवयित्री ने कवि निराला की जीवन शैली का परिचय देकर उनकी रचनाओं का साहित्यिक विश्लेषण किया,जिससे उनकी सिद्धांतवादी,आक्रोश, विद्रोह, करुणा और प्रतिबद्धता से पूर्ण व्यक्तित्व परिलक्षित हुआ। साथ ही महोदया ने अपनी कृतिओं के प्रदर्शन से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया, जिनमें काव्य एवं संगीत का सुंदर समागम था। तद् पश्चात कार्यालय के इच्छुक अधिकारी व कर्मचारी द्वारा स्वरचित कविता पाठ किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्ष महोदय ने भी कवि 'निराला' की साहित्यिक सफर पर प्रकाश डालते हुए 'अनामिका', 'परिमल', 'गीतिका', 'तुलसीदास' जैसे कृतियों एवं उनके संघर्षों से अवगत कराया। साथ ही, दोनों कार्यालयों से कविता पाठ करने वाले प्रतिभागियों का उत्साह वर्धन भी किया।

अंत में उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा), श्री नितीन गंगाधर पुके द्वारा धन्यवाद ज्ञापित कर कार्यक्रम का समापन किया गया।

मुंशी प्रेमचंद जयंती

31 जुलाई 2025 को कार्यालय महालेखाकार भवन में हिंदी साहित्य के महान कथा सम्राट 'मुंशी प्रेमचंद' की जयंती के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में डॉ. चित्त रंजन कर (पूर्व प्राध्यापक), भाषा एवं साहित्य विशेषज्ञ, रविशंकर विश्व विद्यालय से एवं विशिष्ट अतिथि के रुप में श्री निकेश पांडे, सदस्य सचिव नराकास की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी श्री एन.के. विश्वाल ने किया साथ ही कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारीगण ने इस अवसर पर उपस्थित होकर मुंशी प्रेमचंद का साहित्य परिचय प्राप्त किया।

मुख्य अतिथि महोदय ने अपने व्याख्यान में कहा कि 'साहित्य मनुष्य को मनुष्य बनाता और जिस प्रकार सरल रेखा खींचना मुश्किल है उसी प्रकार एक सरल मनुष्य कठिन है'। आगे मुख्य अतिथि ने कहा कि मुंशी प्रेमचंद ने जीवन पर्यंत सामाजिक चेतना के लिए कलम चलाया है उनका त्याग और समर्पण अविस्मरणीय है। विशिष्ट अतिथि श्री निकेश पांडे ने राजभाषा की अनिवार्यता पर अपने ज्ञान वर्धक व्याख्यान दिए। उन्होने राजभाषा की आवश्यकता एवं व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए आवश्यक सुझाव दिए। कार्यालय के श्री योगेश हिवेश, वरिष्ठ लेखापाल ने अपनी स्वरचित रचना के माध्यम से प्रेमचंद जी के प्रति अपनी श्रद्धांजली अर्पित की। श्री एन.के विश्वाल ने जीवन में साहित्य की महत्ता एवं प्रेमचंद जी के साहित्यिक संघर्षों पर रोचक व्याख्यान दिए। अंत में सहायक निदेशक (रा.भा.), श्री यशवंत कुमार वर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कार्यक्रम का समापन किया।

मेरा प्यारा छत्तीसगढ़

डुमेश धनकर
लेखापरीक्षक

छत्तीसगढ़ का परिचय- मेरे प्यारे छत्तीसगढ़ के बारे में कहाँ से बताना शुरू करूँ, क्योंकि बताने को बहुत कुछ है और शब्द सीमा बहुत कम। भारत देश का दिल है-छत्तीसगढ़, उसके बारे में बहुत कम ही जानकारी लोगों को पता है। छत्तीसगढ़ वासी ही छत्तीसगढ़ के बारे में नहीं जानते, तो अन्य को कैसे पता रहेगा। लोग छत्तीसगढ़ को नक्सल क्षेत्र के रूप मे ही जानते हैं या फिर गरीब राज्य के रूप में। दोनों ही कथन सत्य है लेकिन ऐसा क्यों और कैसे ? ये जानने की कोशिश जरूर करियेगा।

विश्व की पुरातन धरोहरों में शामिल पाषाणकालीन अनेक स्थल छत्तीसगढ़ में प्राप्त हुए है जिसमे सबसे अनोखी रायगढ़ की गुफाओं में चित्रित जलपरी विशेष आकर्षण का केंद्र है। रामराज्य (असली वाला) छत्तीसगढ़ या दक्षिण कोसल, जो प्रभु श्रीराम का ननिहाल और उनका राज्य रहा और बाद में उनके पुत्र कुश को छत्तीसगढ़ राज्य प्राप्त हुआ, जिसकी राजधानी कुशस्थली कहलाई। चारों युगों की नगरी- रतनपुर, जिसे वर्तमान में आप बिलासपुर के नाम से जानते है, नाम के जैसे ही ऐश्वर्य से परिपूर्ण राज्य की राजधानी थी। अवस्थिति से इतिहासकारों के अनुसार महाजनपद कालीन चेदि ही अपभ्रंश होकर छेदिसगढ़ या छत्तीसगढ़ कहलाया। किसी भी राज्य की संपन्नता उसके गढ़ों से होती है और यहाँ पर कल्चूरी काल में 36 गढ़ (किला) हुआ करते थे। शिवनाथ नदी के उत्तर में 18 गढ़ और दक्षिण में 18 गढ़, इस वजह से भी इस राज्य का नाम छत्तीसगढ़ पड़ा। प्राचीन समय से लेकर अंग्रेजों के काल तक बस्तर क्षेत्र दंडकारण्य प्रदेश के रूप में विख्यात था। इसी दंडकारण्य में प्रभु श्रीराम ने अपने वनवास का अधिकतम समय व्यतीत किया।

लव-कुश की जन्मस्थली- महर्षि वाल्मीकि का आश्रम, माता शबरी की तपोभूमि छत्तीसगढ़ में ही है। पांडवों का वनवास स्थल, लाक्षागृह ये सभी छत्तीसगढ़ से ही संबन्धित है। आपको यहाँ का अनोखा रिवाज बताता हूँ- छत्तीसगढ़ राज्य में राजा भानुमत राज्य किया करते थे, जिनकी पुत्री भानुमती थी जिनका विवाह हुआ था, सम्राट दशरथ से। जी हाँ, रानी भानुमती ही प्रभु श्रीराम की माता, कौशल्या थी, जिनका नाम कोसल प्रदेश के कारण कौशल्या हुआ। प्रभु श्रीराम का ननिहाल और यहाँ के वासियों द्वारा उन्हे भांजा मानने के कारण छत्तीसगढ़ में मामा, भांजे का चरण स्पर्श करते है। महाजनपदकाल के उपरांत बड़े भारतीय राज्यों का प्रभाव छत्तीसगढ़ में बना रहा, चाहे मौर्यकाल या कुषाण कालीन, चाहे आंध्र-सातवाहन हो या गुप्तकाल।

सम्राट समुद्रगुप्त के दक्षिणापथ विजयी अभियानों से ज्ञात होता है कि दक्षिण के बारह विजित राजाओं में कोसल (उत्तर छत्तीसगढ़) के शरभपुरीय राजा महेंद्र और महाकांतार (दक्षिण छत्तीसगढ़) के नलवंशीय राजा व्याघ्रराज को हराया, किन्तु उनकी वीरता से प्रभावित होकर उनका राज्य लौटा दिया। बाद में शरभपुरीय राजवंश के राजाओं और गुप्त वंश में वैवाहिक संबंध स्थापित हुए।

संस्कृत के महाविद्वान कालिदास ने मेघदूतम की रचना सरगुजा के रहस्यमयी प्राचीन गुफाओं में की। मध्यकालीन इतिहास के पूर्व में ही छत्तीसगढ़ ने ओड़िया-आंध्र-उत्तर भारतीय संस्कृति को खुद में समाहित कर लिया और अपनी अवस्थिति के कारण ही मध्यकालीन भारत में आए सत्ता संबंधी भूचालों से अप्रभावी रहा, इसी वजह से ही आप देखते है कि छत्तीसगढ़ में क्षेत्रीयता, भाषायी और अन्य भेदभाव अन्य स्थानों की तुलना में नगण्य है। यहाँ की नारियों ने भी अदम्य साहस से दुश्मनों को धूल चटाई है जैसे महारानी दुर्गावती और नल वंश की अंतिम राजकुमारी चमेली।

सहिष्णुता की पराकाष्ठा- महान सम्राट महाशिवगुप्त बालार्जुन, छत्तीसगढ़ को धर्मक्षेत्र बनाने में जिनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान रहा। सनातन, बौद्ध एवं जैन धर्म को समाहित कर लिया, जिसके अवशेष आज भी सिरपुर (श्रीपुर नगरी) में देखा जा सकता है। उन अवशेषों से ही ज्ञात हो जाता है कि यदि अभी जीर्ण-शीर्ण अवस्था में ये इतने शानदार है तो 7वी शताब्दी में इनकी ऐश्वर्यता कितनी मनमोहक रही होगी।

मध्यकाल में जहां पूरे भारत में अमानवीय शक्तियों का प्रभाव फैला हुआ था, उस समय भी छत्तीसगढ़ शांत अवस्था में था। सबसे लंबे समय तक राज करने वाले कल्चूरी और काकतीय राजवंश ने छत्तीसगढ़ में स्थिरता बनाया रखा। अंग्रेजों के शासन काल ने सदियों से शांत छत्तीसगढ़ को सिर्फ 100 सालों में भी गरीब और अशांत बना डाला।

अंग्रेजों के जाने के बाद यह मध्य प्रांत और बाद में मध्यप्रदेश का हिस्सा बना लेकिन आजादी के आधी सदी के बाद तक यह क्षेत्र उपेक्षित रहा, प्रांत का प्रथम मुख्यमंत्री देने के बावजूद भी। प्राकृतिक सम्पदा से परिपूर्ण यह राज्य मध्य प्रांत की ऊर्जाधानी थी।

आइये देखे छत्तीसगढ़ की स्थितिः- 01 नवंबर 2000 को निर्मित यह राज्य 3 करोड़ जनसंख्या के साथ छब्बीसवाँ राज्य बना। देश का सबसे बड़ा स्टील प्लांट भिलाई स्टील प्लांट, कोरबा के विद्युत ऊर्जा संयंत्र, पूरी दुनिया में भेजे जाने वाले लौह अयस्क और कोयला, सीमेंट उत्पादन में अग्रणी, पूरे भारत का एकलौता टिन उत्पादक राज्य, देश का पहला लिथियम ब्लॉक क्षेत्र, बैटरी स्टोरेज मामलें में देश का पहला राज्य, भोले-भाले नागरिक, सबसे ज्यादा राजस्व प्रदान करने वाला रेल्वे जोन, 36 शक्तिपीठ वाला क्षेत्र, धान का कटोरा,वन क्षेत्र में देश में तीसरा और दूसरा सबसे ज्यादा कार्बन स्टॉक वाला,जीएसटी संग्रहण में सबसे तेज प्रगति करने वाला, सर्वप्रथम खाद्य सुरक्षा प्रदान करने वाला राज्य, धान की सर्वाधिक किस्म, 75 दिनों के दशहरे के लिए प्रसिद्ध, आज भी आदिवासी संस्कृति को संजोकर रखने वाला यह राज्य, निर्माण के 25 वर्षों में धीरे धीरे प्रगति की ओर निरंतर अग्रसर हो रहा है। एक लाख पैसठ हजार करोड़ बजट, तीव्र गति से प्रगति की ओर बढ़ता यह राज्य जहाँ महिलाएं, पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर राज्य की प्रगति में भागीदारी सुनिश्चित कर रहे हैं।

प्रकृति, इतिहास और आस्था का समागम स्थलः- डोंगरगढ़ बन रहा है धार्मिक सौहार्द्र का ट्राई-जंक्शन। यहाँ पर माता बमलेश्वरी मंदिर,मुनि विद्यासागर के समाधि स्थल चंद्रगिरी (जैन तीर्थ) और विश्व बौद्ध परिषद का समागम स्थल प्रज्ञागिरी (बौद्ध तीर्थ) के बीचों-बीच श्रीयंत्र पिलग्रीम सेंटर का निर्माण किया गया है, यह तीन तलीय स्मारक (भूतल में खानपान, प्रथम तल में यात्रियों के ठहरने-पुस्तकालय और द्वितीय तल में ध्यान केंद्र) विशेष आकर्षण का केंद्र बना हुआ है।

बाबा गुरु घासीदास धाम में स्थित कुतुबमीनार से भी ऊंचा जयस्तम्भ(जैतखाम) संत शिरोमणि गुरु घासीदास के जन्मस्थल गिरौदपुरी में स्थित है। जिले के शिवनाथ और खारुन नदी के संगम पर स्थित सोमनाथ मंदिर, छत्तीसगढ़ के पहले शहीद वीर नारायण सिंह की धरती सोनाखान, बारनवापारा वन्यजीव अभयारण्य, महर्षि वाल्मीकि का आश्रम तुरतुरिया आकर्षण के केंद्र है। कबीरधाम में स्थित छत्तीसगढ़ का खजुराहों भोरमदेव (वर्तमान में यह एक शैव मंदिर है लेकिन कनिंघम के अनुसार प्रारम्भ में यह मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित था)

कबीरधाम जिले का बोड़ला महादेव मंदिर भक्तों की आस्था का केंद्र है जबकि सरोधा दादर अपनी शांत वादियों, जैव विविधता और ट्रेकिंग रूट्स के लिए जाना जाता है। साथ ही, प्रेम और शौर्य का प्रतीक मड़वा महल और देवान पटपर अपने रहस्यमय चुंबकीय प्रभाव के कारण पर्यटकों को आकर्षित करता है। छत्तीसगढ़ का स्वर्ग चिल्फी घाटी, रानी दहरा जलप्रपात और प्रकृति और रोमांच का संगम स्थल भोरमदेव अभयारण्य भी अति मनमोहक है।

आदिवासी संस्कृति की विश्वस्तरीय पहचान के लिए बस्तर ओलंपिक और बस्तर पंडुम कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। जिसमें बस्तरवासियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। बस्तर ओलंपिक, जिसमें पैसठ हजार से भी अधिक प्रतिभागियों ने 11 खेल विधाओं के अंतर्गत खेल प्रतियोगिताओं में विकासखण्ड, जिला और संभाग स्तर पर भाग लिया। जिनमें एथलेटिक खेल में 100मी., 200मी. 400मी. दौड़, लंबीकूद, ऊंचीकूद, शॉटपूट, डिस्कस थ्रो, जैवेलिनथ्रो एवं रिले रेस, तीरंदाजी इंडियन राउण्ड 30मी., 50मी., बैडमिंटन, फुटबॉल, हॉकी, वेटलिफ्टिंग, कराते, कबड्डी, खो-खो, व्हॉलीबॉल एवं रस्साकसी के खेल शामिल रहे। बस्तर पंडुम गोंडी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है बस्तर का उत्सव।

इस आयोजन में 08 विधाओं

1. **जनजातीय नृत्य** (गेड़ी, गौर माड़िया, ककसाड़, मांदरी, हुलकीपाटा, परब),
2. **जनजातीय गीत** (चौतपरब, जगारगीत, धनकुल, लेजा, हुलकीपाटा),
3. **जनजातीय नाट्य,**
4. **जनजातीय वाद्ययंत्र** (धनकुल, ढोल, चिटकुल, तोड़ी, अंकुम, झाब, मांदर, मृदंग, बिरिया ढोल, सारंगी, गुदुम, मोहरी, सुलुड, मुंडाबाजा, चिकारा),
5. **जनजातीय वेशभूषा एवं आभूषण** (लुरकी, करधन, सुतिया, पैरी, बाहूँटा, बिछिया, एंठी, बंन्धा, फुल्ली, धमेल, नाँगमोरी, खोचनी, मुंदरी, सुर्रा, सुता, पटा, पुतरी, नकबेसर)
6. **जनजातीय चित्रकला एवं शिल्प कला** (घड़वा, माटी कला, काष्ठ, ढोकरा, लौह प्रस्तर, गोदना, भित्तिचित्र, शीशल, कौड़ी शिल्प, बाँस की कंघी, गीकी, घास के दानों की माला),
7. **जनजातीय तीज-त्योहार,**
8. **जनजातीय पेय पदार्थ और व्यंजन** (सल्फी, ताड़ी, छिंदरस, लाँदा, कोसरा, जोन्धरा व माड़िया पेज, चापड़ा चटनी, सुक्सी पुड़गा, मछरी पुड़गा, मछरी झोर, आमट साग, तिखुर, बोबो) आदि बनाने की विधि, स्थानीय मसाले, स्वाद का प्रस्तुतिकरण बस्तर पंडुम का आकर्षण रहा है।

महाकुंभः संगम में डुबकी, कर्मों से मुक्ति

यशवंत वर्मा
सहायक निदेशक (राजभाषा)

भारत, धर्म, आस्था एवं कर्म प्रधान देश है। यहां मोक्ष को जीवन का अंतिम लक्ष्य माना गया है। इस हेतु समय-समय पर या ग्रह नक्षत्र की अनुकूल स्थिति पर भारत में कई ऐसे अनुष्ठान होते हैं जिनमें भारतवासी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। कुंभ भी इसी अनुष्ठान का एक प्रकार है जो भारत में चार जगह- प्रयाग राज, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन में आयोजित होता है। कुंभ हर 4 साल में, अर्धकुंभ 6 वर्षों में तथा महाकुंभ 12 वर्षों के अंतर में अलग-अलग जगह आयोजित होता है। विभिन्न पुराणों एवं कई प्राचीन मौखिक आधारित लेखों में इन्ही चार जगहों पर अमृत मंथन के दौरान 'कुंभ' अर्थात घड़ा से अमृत गिरने का उल्लेख हुआ है। इतिहासकारों के अनुसार लगभग 10000 ई.पू. से ही नदियों को जीवन में विशेष दर्जा दिया गया है तथा नदी स्नान को शारीरिक एवं मानसिक शुद्धि का माध्यम माना गया। 600 ई.पू. के आसपास प्रमुख नदियों के तटों पर मेलों का आयोजन किया जाने लगा। 350 ई. के आसपास प्रयाग के गंगा- यमुना संगम में स्नान को पवित्र माना गया और उस समय के विजयी राजा प्रयाग की तीर्थयात्रा करते थे।

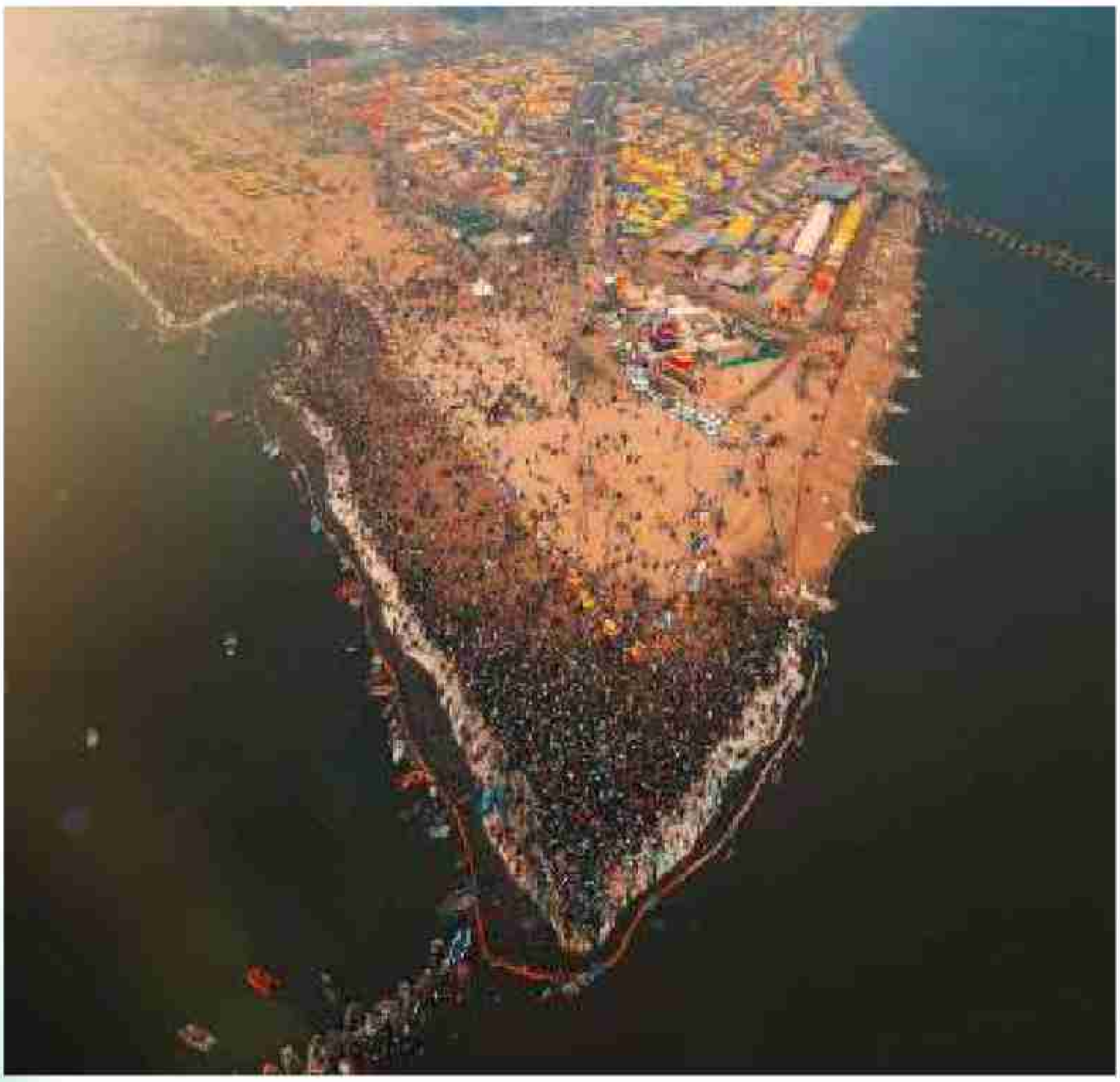

उत्तर प्रदेश, प्रयाग राज में वर्ष 2025 में आयोजित महाकुंभ को 144 वर्षों का विशेष संयोग का दर्जा दिया गया है। प्रचार-प्रसार ज्यादा होने से स्वाभाविक था कि करोड़ों की भीड़ इकट्ठी होने वाली थी बावजूद इसके हम दोनों (पत्नी सहित) ने विशेष पर्व मौनी अमावस्या के दिन संगम जाने का मन बना लिया। मेरा जाने का मुख्य उद्देश्य वहां की भीड़ प्रबंधन और आध्यात्मिक उर्जा को अनुभव करना था जबकि मेरी पत्नि संगम स्नान को लेकर ज्यादा उत्साहित थी। ट्रेन टिकट कंफर्म तो नहीं था इसलिए जाने की संभावना अधर में लटकी थी। यात्रा में जाने के पूर्व मैंने काफी समय से चले आ रहे द्वन्द्व की स्थिति पर अंतिम निर्णय लेते हुए अपनी अनिवार्यता औराकांक्षा को संतुष्ट किया, एक नयी कार खरीद लाया। प्रबंधन और आध्यात्मिक उर्जा को अनुभव करना था जबकि मेरी पत्नी संगम स्नान को लेकर ज्यादा उत्साहित थी। ट्रेन टिकट कंफर्म तो नहीं था इसलिए जाने की संभावना अधर में लटकी थी। यात्रा के दिन संयोगवश रेलवे के एक मित्र की मदद से तय तिथि 27 जनवरी 2025 को टिकट कंफर्म हो गया।

जिनका श्रेय मेरी पत्नी ने अपने प्रतिदिन के प्रार्थना को दिया। घर से रायपुर प्लेटफार्म पहुंचते तक मेरे मन में उधेड़ बुन चल रहा था कि प्रयागराज के जनसैलाब में रुकने, खाने की व्यवस्था उचित ढंग से हो पायेगा कि नहीं? ऐसी बात नहीं कि मैं नास्तिक हूं, बात ये हैं कि हम जैसे ज्यादा पढ़े लिखे लोग आध्यात्म को आधुनिकता की चश्में से देखते हैं। प्लेट फार्म में मैंने देखा कि उम्रदराज पुरुष हो या महिला बड़े उत्साह के साथ ट्रेन के आने की प्रतिक्षा कर रहे थे। एक मैं था जो पूर्णत: सक्षम और शिक्षीत होकर भी नये जगह जाने से घबरा रहा था, उन लोगों को देखकर मुझमें भी विश्वास और साहस के साथ आध्यात्मिक भाव पनपने लगा। ट्रेन आई नि:संदेह जनरल बोगियों में यात्री अपने पैर के अंगूठे पर खड़े थे। शुक्र है कि हमारा सीट ए.सी. बोगी में था जहां बेटिकट यात्री प्रवेश करने के पहले सोचते हैं, ऐसा भ्रम था मुझे प्रयागराज पहुंचने के 4 घंटे पहले तक। उसके बाद तो यात्रियों ने ऐसा धावा बोला कि हम सब को सीटों से उठकर बैठना पड़ा।

संध्याकाल में हम दोनो ने स्नान किए और वहां की अद्भुत दृश्य का आनंद उठाने लगे। हमारा मुख्य उद्देश्य था अगली सुबह (मौनी अमावश्य) का स्नान और शायद वहां मौजूद सभी श्रद्धालुओं का भी यही स्वप्न था। इस बीच भीड़ एक-दो बार बेकाबू हुई पर सुरक्षा कर्मियों की सक्रियता से नियंत्रित हो गयी। इतनी अत्यधिक जन समूह को नियंत्रित करना यह किसी शासन या सुरक्षा कर्मी की बस की बात नहीं थी प्रत्येक आदमी को सचेत होकर सुरक्षित ढंग अपनाना था। फिर विचार हुआ कि नदी पार कर मेला के मुख्य क्षेत्र में घुमा जाये, मेरे मन मे थोड़ी दुविधा तो अवश्य हुई क्योंकि हमारा वापसी का स्टेशन यहां से मात्र 6 किमी. दूर था आशंका थी कि कहीं मेला क्षेत्र में योजना न बाधित हो जाए। वही हुआ जिसकी आशंका थी, वापसी के मार्ग को बंद कर दिया गया था और उस पार जाने के लिए लगभग 5 किमी ज्यादा चलना पड़ेगा फिर उसके बाद स्टेशन तक जो चलना पड़ेगा वो अलग।

कुछ यात्रियों ने नियम का हवाला देकर टीटी से शिकायत करना चाहा पर कुछ ने सहृदयता दिखाते हुए अपने सीटों में स्थान दिया जिसमें मेरी पत्नी भी थी। इसके बाद कुछ स्टेशन ऐसी आई जिसमें जनसमूह प्लेटफार्म पर लाचार अवस्था में भीड़ को ताकते हुए खड़े दिखाई दे रहे थे।

आखिर तय समय में प्रयागराज पहुंच गए जहां लाखों की भीड़ संगम की ओर जय घोष के साथ कूच करते हुए नजर आ रहे थे। स्टेशन से संगम की दूरी लगभग 7 कि.मी. थी परंतु यात्रियों के उत्साह और आस्था के सामने ये दूरी आधी प्रतीत हुई। घाट पर पहुंचने के बाद वहां जन सैलाब का नजारा अविस्मरणीय था, जहां तक नजर जाती थी वहां तक केवल श्रद्धालू ही दिखाई पड़ते थे। अव्यवस्था से निपटने के लिए पुलिस प्रशासन की तैनाती पर्याप्त तो नहीं थी पर प्रभावी अवश्य थी।

योजना बनी की इधर ही किसी संत के टेंट में रात्रि विश्राम कर सुबह स्नान करते ही वापसी हो लेंगे। परंतु भीड़ के कारण वहां से भी खदेड़े गए। कई लोग टेंट के बाहर मार्ग के किनारे ही विश्राम करने को विवश थे। मेरी पत्नी का भी एक बार मन हुआ लेकिन मैं सहमत नहीं हुआ क्योंकि भीड़ और धूल के कारण वहां एक क्षण रुक पाना हितकर नहीं था। तय हुआ कि अभी जितना चलना होगा चलेंगे और नदी के दुसरे छोर पर विश्राम करेंगे। तय अनुसार दुसरे छोर पर नदी किनारे को बिछौना और व्यक्तियों के चहल कदमी से गुंजायमान सर्द वातावरण को चादर बनाकर रात में कुछ घंटे आराम किए। रात भर व्यक्तियों का वापसी वाले पुल से गुजरने का कारवां चलता रहा। हमनें भी सुबह जल्दी स्नान कर आवश्यक रिवाज पूर्ण किए और वापसी वाले कारवां में जाकर मिल गए।

भौतिक रुप से यदि देखा जाए तो गंगा में न तो पर्याप्त पानी है और न ही शुध्दता है लेकिन यह आस्था का असोख्य स्त्रोत और भावनाओं का सतत निर्मल प्रवाह है। अवचेतन मन जिस धारणा को स्वीकार कर लेता है उसका प्रभाव शरीर, मन और जीवन में महसूस किया जा सकता है। इसीलिए तो कहा गया है ''मन चंगा तो कठोती में गंगा''। मैनें भी इस स्नान के बाद शांति और आध्यात्मिक भाव महसूस किया। लेकिन मेरे मन में ट्रेन को समय पर और सकुशल पकड़ पाने की चिंता मन से पूरी तरह धुली नहीं थी। अब हमें वहां से लगभग 15 किमी पैदल चलकर अप. 3.00 बजे छिक्की, प्रयागराज स्टेशन से ट्रेन बैठना था। धीरे-धीरे बढ़ते गए लगभग10 किमी तक का फासला पूरा कर करने के बाद अब हर एक कदम भारी जान पड़ने लगा। सहसा मुझे प्रयागराज का एक कार्यालयीन मित्र (राजशे पटेल) याद आया और उसे फोन पर स्थिति से अवगत कराया। संयोगवश उनका एक मित्र उसी दिन गाड़ी से कुंभ स्नान को आया था। उन्होने फोन पर ही कहा - ''वर्मा जी याद कीजिये 5 वर्ष पहले मेरे फोन करने पर आपने रायपुर में एक आदमी को आश्रय दिया था और उन्हे परीक्षा स्थल तक छोड़ा भी था, ये वही रमेश है।'' रमेश ने हमारा प्रतिक्षा किया और जगह-जगह पाबंदी के बावजूद किसी तरह हमें गंतव्य तक समय पूर्व छोड़ा। मैंने कृतज्ञतापूर्ण धन्यवाद दिया, रमेश ने मुस्कुराकर इतना कहा - ''ये तो आपका उपकार था जो आज मुझे वापस करने का अवसर मिला''। बात तो दोनो समझ गये थे पर उस वातावरण में विश्लेषण करने का अवसर नहीं था।

स्टेशन पर भीड़ को काबू करने और अप्रिय घटना से निपटने के लिए रेलवे की तैयारी बेहद प्रभावशाली था। सुरक्षा घेरे के अंदर वे ही यात्री प्रवेश कर पाते थे जिनके पास कंफर्म टिकट हो साथ ही यात्रियों को एक पंक्ति बनाकर ट्रेनों में बैठाया जा रहा था। अंदर प्रवेश करते ही ये सब सुव्यवस्था देखकर मेरे जान में जान आयी और विश्राम करने लगा। जब मन शांत और विश्राम की अवस्था में होता है तब अवचेतन मन सक्रिय हो जाता है और हम पूर्व की घटना में छुपे आनंद, रहस्य को स्पष्ट अनुभव करते हैं। मैं कुंभ के भीड़ से निकलने वाली आस्था की उर्जा, स्नान के बाद आध्यात्मिकता और भीड़ प्रबंधन की व्यवस्था को अनुभव कर रहा था। रमेश का मुझे मिलना या ये कहें रमेश को मेरा मिलना भी कुंभ की यात्रा को विशिष्ट बनाया।

व्यक्ति को जहां अवसर मिलें सहायता करनी चाहिए सहायता के लिए अवसर की तलाश नहीं करनी चाहिए। यह सत्य है कि किया गया कर्म जरूर एक दिन वापस आता है। समय जितना अधिक लगेगा उतना ही अधिक लाभकारी होगा। आज हम जो कर्म कर रहे है उनका 'हेतू' भूतकाल में छिपा है। इस कुंभ यात्रा के बाद से ऐसे कई सकारात्मक घटनायें घटी जिसके आधार पर मैं यह स्वीकार करने को विवश हो गया कि अवश्य मेरे कुछ पूर्व कर्म तिरोहीत हुए हैं।

चार दिन अस्पताल के..

अविनाश सिन्हा
सहायक लेखा अधिकारी

चार दिन हो गए हैं अस्पताल में। यह चार दिन जैसे चार साल बनकर मेरे सिर पर मंडरा रहे हैं। मेरा बेटा-अर्थराज-जो कल तक स्कूल की यूनिफॉर्म में खिलखिलाता हुआ घर लौटता था, आज ऑपरेशन थियेटर के बाहर स्ट्रेचर पर पड़ा है।

सब कुछ अचानक हुआ। उस दिन सुबह, वो पेट पकड़कर तड़प उठा। शुरू में लगा गैस है, या फिर हल्का दर्द होगा, लेकिन जब उसका चेहरा पीला पड़ने लगा और आँखों से आँसू बहने लगे, तो दिल में जोर झटका सा लगा, उसे मैं शब्दों में बयाँ नहीं कर सकता। भागते-भागते हम उसे नजदीकी अस्पताल ले गए।

डॉक्टर ने जाँच की और बस इतना कहा- **"Appendicitis"** है, तुरंत भर्ती करना होगा। ऑपरेशन जरूरी है। पहले तो लगा ये कोई सामान्य बात होगी, लेकिन जब डॉक्टर की आँखों में चिंता देखी, तो दिल कांप गया। अपने बेटे के लिए आदमी दुनिया से लड़ सकता है, लेकिन बीमारी से लड़ने की बेबसी... भीतर ही भीतर तोड़ देती है।

चार दिन से अस्पताल का कमरा ही मेरी दुनियाँ है। सुबह डॉक्टरों की राउंड, दिन भर खामोशी में उसकी करवटें बदलते देखना, और रात को बगल की कुर्सी पर बैठे-बैठे नींद से लड़ना यही मेरी दिनचर्या बन गई है। अर्थराज अभी सिर्फ आठ साल का है। इतना छोटा कि बीमारी का मतलब भी नहीं जानता, लेकिन दर्द से लड़ने का साहस उसके मासूम चेहरे पर साफ दिखता है। ऑपरेशन से पहले भी वह सिर्फ यही पूछता रहा - ''पापा, घर कब चलेंगे? उसकी आँखों में डर था, लेकिन जब मेरी उंगलियाँ उसकी उंगलियों में फँसी होतीं, तो वह थोड़ी देर के लिए शांत हो जाता। वो बच्चा जो रोज स्कूल से लौटकर चॉकलेट माँगता था, आज बस इतना चाहता था कि मम्मी-पापा उसके पास रहें। अस्पताल के बिस्तर पर लेटा अर्थराज अब बच्चा नहीं, जैसे एक छोटा सा योद्धा बन गया था जो तकलीफ में भी मुस्कराने की कोशिश करता था।

मेरी पत्नी रंजना, जो बाहर से हमेशा मजबूत दिखती है, अंदर से बिल्कुल टूट चुकी थी। उसका चेहरा बिना कुछ कहे सब कुछ बोल जाता था। वह दिन-रात अर्थराज के सिर पर हाथ फेरती रही, ममता के हर भाव को समेटे हुए। मैंने उसे कई बार देखा, जब वह अकेले कोने में जाकर चुपचाप रो लेती थी और फिर लौटकर बेटे के सिरहाने वही मुस्कान ले आती थी। पहले दिन ऑपरेशन नहीं हुआ, डॉक्टरों ने कहा - टेस्ट होंगे, तब देखा जाएगा। दूसरे दिन सोनोग्राफी हुई, रिपोर्ट आई और फिर तय हुआ - ऑपरेशन होगा। मैं डॉक्टर से कई बार पूछ चुका हूँ - ''कोई खतरा तो नहीं?'' डॉक्टर मुस्कुरा कर कहते हैं - ''नॉर्मल प्रोसीजर है, घबराइए मत। लेकिन क्या किसी बाप का दिल यह मान सकता है कि घबराना नहीं है!

ऑपरेशन से ठीक पहले का वो पल आज भी मेरी रगों में कांपता है। डॉक्टरों ने अर्थराज को स्ट्रेचर पर लिया और जब उसके नाक में पाइप डाला जाने लगा, तब वो घबरा गया। उसकी आँखों में एक ऐसा डर था जो शायद ही कोई पिता कभी देखना चाहे। उसने रोते हुए रंजना को पुकारा ''माँ... माँ.मुझे बचा लो... माँ प्लीज! वो चिल्ला उठा। और नर्सों को, वार्ड बॉय को बार-बार कहता रहा -'' दीदी... भैया... मुझे छोड़ दो, मैं ठीक हूँ, प्लीज छोड़ दो!'' उस समय मैं जानबूझकर पास नहीं था। खुद को मजबूत दिखाने की मेरी सारी कोशिश उस पल टूट गई थी। लेकिन मैं जानता था -अगर मैं वहाँ होता, तो शायद खुद को रोक न पाता। उस वक्त रंजना की ममता और उसके आँसू ही अर्थराज की ढाल बन गए थे। और मैं दूर खड़ा, हर उस चिल्लाहट को अपने सीने में महसूस कर रहा था, जिसे शब्दों में बयाँ नहीं किया जा सकता।

तीसरे दिन ऑपरेशन हुआ। ऑपरेशन करीब 40 मिनट चला। मैं ओ.टी. के बाहर खड़ा था, हाथ में उसकी पानी की बोतल पकड़े। दिल जैसे किसी अनदेखी दीवार से टकराता रहा। हर आती-जाती नर्स को देखता और नजरें उससे बेटे की खबर पूछतीं। और फिर डॉक्टर ने आकर कहा **"Appendix"** में इंफेक्शन था, हमने हटा दिया। अब चिंता की कोई बात नहीं। उस क्षण मेरे मन से जैसे कोई बड़ा बोझ उतर गया। लेकिन अस्पताल के ये दिन मुझे बहुत कुछ सिखा गए। यहाँ हर बिस्तर एक कहानी है- एक ऐसी कहानी जो सिर्फ सुनाई नहीं देती, महसूस की जाती है। किसी माँ का बच्चा **ICU** में है, उसकी आँखें रातभर जागने के बाद भी बेटे की हर साँस गिन रही हैं। किसी बाप के हाथ में दवाइयों की पर्ची है और आँखों में लाचारी जैसे किसी युद्ध में बिना हथियार के खड़ा हो। बगल के बेड पर एक मजदूर अपने बेटे के लिए खून देने आया था। उसके फटे हुए जूते, मैले कपड़े और थके हुए चेहरे पर कोई शिकायत नहीं थी बस एक प्रार्थना थी ''भगवान, मेरा बच्चा ठीक हो जाए, बाकी सब बाद में देखा जाएगा।''

अस्पताल की इन दीवारों के भीतर सब कुछ बदल जाता है जाति, धर्म, पैसा, ओहदा... सब जैसे बाहर ही छूट जाते हैं। यहाँ कोई अमीर नहीं होता, कोई गरीब नहीं होता यहाँ सिर्फ माँ-बाप होते हैं, बीमार बच्चों के लिए तड़पते हुए। इन गलियारों में बस इंसानियत की आवाज गूंजती है जो रो रहा है, वही समझ पाता है कि दूसरा कितना टूटा हुआ है। जब कोई माँ किसी अजनबी बच्चे के लिए भी दुआ माँगती है, तब लगता है यही असली दुनिया है। अस्पताल एक आईना है जिसमें समाज के असली चेहरे उभरते हैं और हम देख पाते हैं कि दर्द सबका एक-सा होता है, आँसू सबके एक-से बहते हैं।

ऑपरेशन से तीसरी रात जब अर्थराज को दर्द से कराहते देखा मैं अंदर ही अंदर टूटने लगा, तभी रंजना मेरी पत्नी ने मेरा हाथ थाम लिया। उसकी आँखों में आँसू थे, लेकिन आवाज में हौसला। रंजना ने बेटे के सिर पर हाथ फेरते हुए मुझसे कहा- ''कभी-कभी लगता है कि हम इस बच्चे को जी नहीं पाए बस

बड़ा करने में लगे रहे।'' मैं चुप था।

सच तो यही था, स्कूल, दवाई, पढ़ाई, समय पर सोना, हमने अपने बेटे को एक प्रोजेक्ट समझ लिया था। लेकिन जब मैंने बेटे की उँगलियों को अपनी उँगलियों में फँसाकर पकड़ा और उसने भी अपनी नींद में कस कर मेरा हाथ थामा तो लगा, ये रिश्ता शब्दों से नहीं चलता। ये स्पर्श से, साथ से और संवेदना से चलता है। अर्थराज सिर्फ मेरा बेटा नहीं है वह मेरा साहस है, मेरी उम्मीद है।

हम दोनों ने एक-दूसरे की आँखों में देखा जहाँ डर भी था और उम्मीद भी। इन चार दिनों में मैंने जाना कि एक माँ का दिल कितना मजबूत होता है। रंजना दिन-रात अर्थराज के सिरहाने बैठी रही, उसकी हर हलचल पर नजर रखी। और मैं... जो आमतौर पर कम बोलता हूँ, अपनी भावनाएँ छुपा लेता हूँ आज पहली बार समझ पाया कि परिवार का सबसे सच्चा प्यार वही होता है, जहाँ माँ की ममता, पिता की खामोश चिंता और बेटे की मासूम मुस्कान तीनों एक-दूसरे में साँस लेते हैं।

चौथे दिन डॉक्टर ने कहा कि अब खतरे की बात नहीं। बस कुछ दिन देखभाल की जरूरत है। पर इन चार दिनों में मैंने जाना कि जिंदगी कितनी नाजुक है। रोजमर्रा की दौड़ में हम भूल जाते हैं कि असली खुशी अपनों की मुस्कान में है, उनके स्वस्थ रहने में है। हम पैसे, प्रमोशन, दुनिया की भाग-दौड़ में लगे रहते हैं और जो हमारे सबसे करीब होते हैं उनकी सेहत, उनकी छोटी-छोटी बातें हम अनदेखा कर देते हैं। इन सबके बीच, सबसे अनकहा रिश्ता एक बाप और बेटे का है। मैं अक्सर अपनी भावनाएँ नहीं दिखा पाता। बचपन से सिखाया गया था कि मर्द रोते नहीं।

इसलिए अर्थराज के सामने मैं कभी रोया नहीं, कभी प्यार जताया नहीं। लेकिन जब वो दर्द से कांपता था और मैं उसका हाथ पकड़कर बस उसके माथे पर हाथ फेरता था तब मेरा सारा प्यार, मेरी सारी भावनाएं मेरी हथेलियों में उतर आता था। मैं उसे कभी नहीं कह पाया कि मैं उससे कितना प्यार करता हूँ। लेकिन जब उसकी उंगलियाँ मेरी अंगुलियों को कसकर पकड़ लेती थीं, तो वो बिना कहे सब समझ जाता था।

आज अस्पताल में बैठा, अपने बेटे का हाथ पकड़कर मैं सिर्फ यही सोचता हूँ ''जिंदगी का असली अर्थ क्या है?'' शायद यही कि अपने अपनों के साथ हर लम्हा जिया जाए। उनकी परवाह की जाए, चाहे वो छोटी-छोटी बातें ही क्यों न हों। मैंने तय कर लिया है अब से ऑफिस से लौटकर सबसे पहले उसके पास जाऊँगा। उसके पास बैठूँगा, उसकी बातें सुनूँगा, उसके खिलौनों की दुनिया में शामिल हो जाऊँगा। क्योंकि क्या पता... कल वक्त हो न हो, या वो मासूम सी आवाज फिर उतनी चहक से बुलाए भी नहीं। कल क्या हो किसे पता?

मैंने उसकी मासूम सांसों को महसूस करते हुए मुस्कुराते हुए सोचा जिंदगी का असली अर्थ है तो मेरे लिए 'अर्थराज'... हाँ.. .. 'अर्थराज' है। यह अस्पताल के चार दिन मेरे जीवन की सबसे बड़ी सीख बन गए हैं। अब अर्थराज धीरे-धीरे ठीक हो रहा है। उसके चेहरे पर फिर से वही मासूम मुस्कान लौट रही है, जो मेरी दुनियाँ है।

मैं जानता हूँ, जिंदगी फिर से दौड़ने लगेगी। लेकिन इन चार दिनों ने मुझे रोककर एक झटका दिया है -'**रुक जा... देख... अपनों को समझ.... जिंदगी इतनी आसान नहीं है कि कल का भरोसा किया जाए।**''

अब मैं रोज भगवान का धन्यवाद करूंगा - मेरे बेटे को सुरक्षित रखने के लिए।
और खुद से भी वादा करूंगा -''**जिंदगी में सबसे जरूरी क्या है, ये कभी मत भूलना।**''

निश्चित ही जीतेंगे

तेजेश सिंह नेगी
पद - संभागीय लेखाधिकारी ग्रेड - 2
वर्तमान कार्यालय - लोक निर्माण विभाग, दुर्ग संभाग, दुर्ग

निश्चित ही जीतेंगे

अगर जो जीतने की प्यास है, निश्चित ही जीतेंगे
हमे है हौसला विश्वास है, निश्चित ही जीतेंगे।
बलिदान हो गए सूरमा आजाद भारत के लिए
यहां का स्वर्णिम इतिहास है, निश्चित ही जीतेंगे।
तुम अपनी बात रखने से भला क्यों हिचकिचाते हो
जब अंदाज हो बिंदास तो, निश्चित ही जीतेंगे।
हिंद की फौज ने दुश्मनों को सदा ही धूल चटाई है
हमारे शत्रु का तय विनाश है, निश्चित ही जीतेंगे।
ठान ले इंसान तो पर्वत भी झुकता है
हमारी साधना अभ्यास है, निश्चित ही जीतेंगे।
जहां जाते है दिल जीत रिश्ते नए जोड़ लेते है
हमारे लहजे में मिठास है, निश्चित ही जीतेंगे।
अमन हो चैन हो विकास का विस्तार हो विश्व में
हिंद का सनातनी प्रयास है, निश्चित ही जीतेंगे।

जंग का सच

जंग अगर सच है, तो अमन भी सच होगा
लाशों से पटी धरती परगुलशन भी सच होगा।
रण के खत्म होते ही, बारूद की गंध से नहाई फिजाओं में
एक बयार फिर फैलेगी,
युद्ध के सायरनो में दबी पंछियों की आवाजें
कानों में मिसरी घोलेगी
खुशियों का अंजुमन सच होगा
जंग अगर सच है, तो अमन भी सच होगा।

ध्वस्त हुई इमारत के मलबे से, उम्मीद का अंकुर फूटेगा
लहू रहित नदियों का जल, फिर बोलेगा कल कल कल
जीवन का आकर्षण सच होगा
जंग अगर सच है, तो अमन भी सच होगा।

गुलदस्तों से सजे मंच पर नेता गले मिलेंगे
परिंदों की होगी रिहाई जख्मों की तुरपाई होगी
रिश्ते की मजबूती को मोहब्बत की सिलाई होगी।

जिस फौजी ने अपनी जान गंवाई देश की शान बढ़ाई
सब सहज हो जाएगा
पर वो वापस न आएगा, पर वो वापस न आएगा।

मानसून का अटकना-लटकना-भटकना

ऋषभ जैन
वरिष्ठ संभागीय लेखाधिकारी
लोक निर्माण विभाग दुर्ग

कहते हैं भटक गया है। मानसून के साथ यही दिक्कत है। भारतीय संतानों की तरह है वह। पाजियों को कितने भी संस्कार पिलाओ, आगे जाकर भटक ही जाते हैं। पिताजी उम्मीद बांधे बैठे रह जाते हैं। जिंदगी के नौतपे में तपते। मानसून का भी वैसा ही है। लोग आस में थे, अब बदरा बरसेंगे झमाझम। मौसम वैज्ञानिकों ने उम्मीद जताई थी कि इस साल अच्छा होगा मानसून। सब-कुछ अनुकूल था। गर्मी, पवन-पुरवाई, एल-नीनो (**EL LINO**) वगैरह। अकसर हमारे देश में प्रतिकूलताएं लाने में विदेशी हाथ पाये जाते हैं। मानसून कमजोर करने के पीछे भी सात समंदर पार के एल-नीनो का हाथ निकलता है। एल-नीनो से भयंकर बिदकता है मानसून। उसकी खबर मिलते ही मौसम वैज्ञानिक चिंतित हो जाते हैं। असफल प्रेम-संबंधों में उपजता है ऐसा व्यवहार। जहां कोई रकीब वगैरह का चक्कर हो। जाने क्या इजहार इकरार तकरार चला होगा हिंद और प्रशांत महासागर के संगम पर। भुगतते हैं हम। प्रशांत महासागर में बैठकर पूरे देश का मुंह लटकवा देता है एल-नीनो। कहते हैं इस साल नहीं था वह। फिर भी भटक गया है मानसून। न जाने क्यों। वैसे भटकना उतनी बुरी बात नहीं है, आशावादी होकर सोचें तो। भटकते वही हैं जो घर से निकलते हैं। भटका है, यह अच्छी बात है। उम्मीद रखी जा सकती है अभी। आज नहीं तो कल आ जायेगा सही रास्ते पर। सुबह का भटका शाम को घर आ जाये तो उसे भटका नहीं कहते। मानसून कहलाता है वह। मान लो वह बनता ही नहीं तो? या बन तो जाता, पर सोचता कौन बढ़े आगे। यहीं हिंद महासागर में ही बरस-उरस के निपट लो। फिर क्या कर लेते आप? अरे भाई मदमस्त सी चीजें कहलाती हैं हवा-पानी। झूमते हुए चलेंगी ही। ऐसे में थोड़ा यहां-वहां हो सकता है मामला। इतना तो एडजस्ट करना चाहिए कद्रदानों को। ये क्या बात हुई कि असाढ़ भी बीता नहीं और अभी से मरे से हो गये सब। निराशा की सबसे ज्यादा हवा किसान बांधते हैं। कहते हैं बोनी नहीं हो पा रही। उन लोगों का रोना खत्म ही नहीं होता कभी। मानसून बोनी कराने बाद हफ्ते भर सुस्ता ले तो हाहाकार मचा डालते हैं कि बीज जल गये। थोड़ा ज्यादा बरस ले तो इनके बीज सड़ने लगते हैं। सिनिसिज्म के रोगी हैं मुए। हर बरस कुछ-न-कुछ लगा रहता ही है इनका। इतनी ही शिकायतें हैं तो अब तक कर लेते अपनी व्यवस्था कोई। खोद लेते कुआं। लगा लेते एचपी पंप। और कुछ नहीं तो पढ़ लिख कर बाबू ही बन जाते कहीं। बाजार से खरीद के गेहूं-चावल जीमते और मस्त रहते। मानसून भटके तो कुछ उपाय होते हैं उसे बुलाने के। इनमें से मेंढक-मेंढकी का विवाह कराना सबसे लोकप्रिय है। ये विवाह भी गजब चीज है। हर भटके को राह पर लाने की शर्तिया दवा प्रतीत होता है यह। फिर वह संतान हो या मानसून। मानसून भी बेमतलब ही भटक जाता है अकसर। जीपीएस के जमाने में शोभा नहीं देता ये सब। हर साल का काम है, अब तक याद हो जाने चाहिए थे रास्ते। हो सकता है, वो जो मील के पत्थर बनाता हो वहां पर नजारा ही बदल जाता हो अगले बरस। कोई रट कर चले कि फलानी घाटी के बाद जंगल देखकर बरसना है, और उस साल जंगल की जगह एक्सप्रेस वे नजर आने लगे तो भटकन तो होगी ही। पेड़ों से मोहब्बत होती है मानसून को। घने पेड़ देखता है तो अच्छा हो जाता है मानसून। मानसून अच्छा होता है तो फसल अच्छी हो जाती है। अच्छी फसल दूर-दूर तक पहुंचती है तो अच्छे दाम मिलते हैं किसान को। लेकिन इसके लिए अच्छे हाईवे जरूरी हैं। अच्छे हाईवे बनाने हों तो पेड़ काटने पड़ते हैं। कम पेंच नहीं हैं मानसून के जीवन में। हमें लगता है कि कालीदास जी के जमाने तक मानसून की चाल-ढाल बढ़िया रही होगी, तभी यक्ष जी ने उसे संदेशवाहक बनाया। धीरे-धीरे ऐसी घनघोर पेचीदगियों का सामना करते-करते जरूरी नहीं रहा कि पेड़ खड़े हों तो सीधी राह चल ही पड़े मानसून। रहीम के समय में तो अच्छे-खासे जंगल रहे होंगे। फिर भी उन्हें पानी की चिंता करते 'रहिमन पानी राखिए' लिखना पड़ा। इससे लगता है मानसून तब भी ऐसा ही था। भटकना तासीर ही लगती है उसकी। सही बात तो ये है कि जिसे दुनिया भटकन कहती हैं वो मस्तमौला-पन है उसका। निदा फाजली साहब ने सही लिखा है, बरसात का बादल तो दीवाना है क्या जाने, किस राह से बचना है किस छत को भिगोना है। अपनी छत की भी बारी की उम्मीद बांधे पकौड़ों का घोल तैयार रखिए बस।

पहलगाम हमला एवं ऑपरेशन सिन्दूर

प्रेम प्रकाश यादव
लेखापाल

22 अप्रैल 2025 को कम से कम चार पाकिस्तानी आतंकवादी बैसरन घाटी के घास के मैदान में घुस आए, जो पहलगाम शहर से लगभग 7 किलोमीटर दूर है। यह इलाका चारों तरफ से घने देवदार के जंगलों से घिरा हुआ है, इस जगह को मिनी स्विटजरलैण्ड के नाम से जाना जाता है और यह पिकनिक मनाने के लिए एक लोकप्रिय जगह है। आतंकवादियों के पास एम 4 कार्बाइन और एके-47 थे और उन्होंने सैन्यशैली की वर्दी पहनी हुई थी। कुछ पर्यटकों से इस्लामी 'कलमा' पढ़ने को कहा गया, ताकि उनका धर्म पहचाना जा सके। कुछ हिंदू पुरुषों को नमाज न पढ़ पाने और खतना न होने पर पैंट उतारने पर

मजबूर किया गया और फिर करीब से गोली मारी गई। घटना की भयावहता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि दुर्दांत आतंकियों ने ना किसी पर्यटक से उसकी जाति पूछी और ना ही क्षेत्र। बस, पूछा तो केवल धर्म। कुल मिलाकर, केवल धर्म के नाम पर हिंसा को अंजाम दिया गया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार,पर्यटकों से उनकी पहचान पूछी गई और कथित तौर पर 'काफिर' मानकर उन्हें निशाना बनाया गया। यह एक बार फिर उस कट्टरपंथी सोच को उजागर करता है, जो आतंकवाद को धार्मिक पहचान से जोड़कर अपनी नापाक साजिशों को अंजाम देती है। ऑपरेशन सिन्दूर भारतीय सशस्त्र सेनाओं द्वारा 6-7 मई की रात को पाकिस्तान और पाकिस्तान-अधिकृत कश्मीर (पीओके)में किए गए एक सैन्य हवाई अभियान का कूटनाम (कोडनेम) है। भारत ने कहा कि इसका उद्देश्य पाकिस्तान और पाकिस्तान-अधिकृत कश्मीर में आतंकवादी ढाँचे को निशाना बनाना था। जिसमें पाकिस्तानी प्रशासित कश्मीर (मुजफ्फराबाद और कोटली) और पाकिस्तान के पंजाब प्रांत (बहावलपुर) में छह स्थानों को लक्षित करते हुए चौबीस हमले किए गए, यानी नियंत्रण रेखा और अन्तर्राष्ट्रीय सीमा दोनों के पार। इन ठिकानों में जैश-ए-मोहम्मद, लश्कर-ए-तैयबा और हिज़्बुल मुजाहिदीन जैसे संगठनों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले 9 आतंकी शिविर शामिल थे। माना जाता है कि ये शिविर भारत के खिलाफ हमलों की योजना बनाने और उन्हें अंजाम देने के लिए जिम्मेदार थे। इस ऑपरेशन को अंजाम देने के लिए, भारत ने उच्च-सटीक हथियारों का इस्तेमाल किया, जिससे न्यूनतम क्षति सुनिश्चित हुई और साथ ही आतंकी ढांचे को प्रभावी ढंग से निष्क्रिय कर दिया गया।

भारत सरकार ने इन हमलों को केन्द्रित, सन्तुलित और गैर-विस्तारवादी बताया, जिसमें लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद से जुड़े आतंकवादी ठिकानों को निशाना बनाया गया और किसी भी पाकिस्तानी सैन्य सुविधा को नहीं मारा गया। भारत ने राफेल जेट, ड्रोन और सटीक मिसाइलों का इस्तेमाल करते हुए, सिर्फ 25 मिनट में हमला पूरा किया, जो भारतीय समयानुसार रात 1:05 बजे से 1:30 बजे तक चला।

लगभग 70 आतंकवादी मारे गए। भारतीय नौसेना अरब सागर में अलर्ट पर रही और सेना ने नियंत्रण रेखा पर सुरक्षा बढ़ा दी।

इस ऑपरेशन का नाम सिंदूर रखा गया, जो पहलगाम हमले में मारे गए लोगों की विधवाओं को श्रद्धांजलि थी। भारत में, सिंदूर एक लाल रंग का पाउडर है जिसे विवाहित महिलाएं अपनी वैवाहिक स्थिति के प्रतीक के रूप में लगाती हैं। ऑपरेशन का नाम सिंदूर रखकर, भारतीय सशस्त्र बलों ने इसे पीड़ितों और उनके परिवारों के साथ एक गहरा भावनात्मक और व्यक्तिगत जुड़ाव प्रदान किया। इस मिशन ने दुनिया को एक कड़ा संदेश दिया कि भारत अपने लोगों की रक्षा के लिए कार्रवाई करेगा। फ्रांस, रूस और अमेरिका जैसे देशों ने भारत के आत्मरक्षा के अधिकार का समर्थन किया। यह ऑपरेशन सिर्फ एक सैन्य कार्रवाई नहीं थी, बल्कि आतंकवाद को एक भावनात्मक जवाब भी था।

ऑपरेशन ब्रीफिंग का नेतृत्व विंग कमांडर व्योमिका सिंह और कर्नल सोफिया कुरैशी ने वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों की एक टीम के साथ मिलकर किया। ऑपरेशन सिंदूर ने आतंकवाद से अपने नागरिकों की रक्षा करने तथा आतंकवादी गतिविधियों का समर्थन करने वालों को कड़ा संदेश देने के भारत के संकल्प को दर्शाया। सुरक्षा विशेषज्ञों की मानें तो, ये कार्रवाई केवल कूटनीतिक नहीं, बल्कि रणनीतिक जवाब की ओर भी संकेत कर रही हैं। भारत सरकार पहले भी सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक के जरिए यह स्पष्ट कर चुकी है कि, आतंकवाद के खिलाफ भारत की नीति 'शून्यसहिष्णुता' की है। अब, जब सरकार ने प्रारंभिक कूटनीतिक प्रतिक्रियाएं दे दी हैं, तो संभव है कि आने वाले दिनों में कोई कदम भी उठाया जाए।

भारत ने आतंकवाद से मुकाबले के लिए समय-समय पर कई प्रभावशाली सैन्य अभियानों को अंजाम दिया है।

प्रमुख अभियान :

ऑपरेशन विजय (1999) : कारगिल युद्ध के दौरान पाकिस्तानी घुसपैठियों को पीछे धकेलने के लिए शुरू किया गया।

ऑपरेशन पराक्रम (2001-2002) : संसद पर हमले के बाद बड़े पैमाने पर सैन्य लामबंदी की गई।

ऑपरेशन जिंजर (2011) : नियंत्रण रेखा (स्वब) के पार एक गुप्त जवाबी हमला।

सर्जिकल स्ट्राइक (2016) : उरी हमले के जवाब में पाकिस्तान-अधिकृत कश्मीर में आतंकवादी लॅन्च पैड्स को निशाना बनाकर सटीक सैन्य कार्रवाई की गई।

बालाकोट एयर स्ट्राइक (2019) : पुलवामा हमले के बाद पाकिस्तान में जैश-ए-मोहम्मद के एक बड़े प्रशिक्षण शिविर को निशाना बनाया।

ये ऑपरेशन भारत की उभरती आतंकवाद विरोधी रणनीति को दर्शाते हैं, जिसमें राष्ट्रीय सुरक्षा की रक्षा करने और आतंकवाद पर अपने शून्य-सहिष्णुता के रुख को बनाए रखने के लिए सैन्य सटीकता, रणनीतिक संयम और कूटनीतिक संदेश को संतुलित किया जाता है।

ऑपरेशन सिंदूर भारत के आतंकवाद से लड़ने के दृढ़ संकल्प को दर्शाता है, जिसमें केवल आतंकवादी ढाँचे को सटीकता और संयम के साथ निशाना बनाया गया है, ताकि स्थिति को बढ़ने से रोका जा सके। यह एक स्पष्ट संदेश देता है कि भारतीय नागरिकों पर हमले बर्दाश्त नहीं किए जाएंगे और इसके जिम्मेदार व्यक्तियों को केंद्रित और जिम्मेदार सैन्य कार्रवाई के माध्यम से जवाब देह ठहराया जाएगा।

निष्कर्षः-

पहलगाम की घटना सिर्फ एक आतंकी हमला नहीं है, बल्कि भारत की एकता, सुरक्षा और संप्रभुता के खिलाफ एक संगठित साजिश है। ऐसे समय में जब कुछ शक्तियां देश में डर और अविश्वास का माहौल बनाना चाहती हैं, सरकार का यह दृढ़ और निर्णायक रुख यह दर्शाता है कि भारत झुकने वाला नहीं है।

बनारस एक जीवंत शहर

पंकज कुमार पाठक
लेखापाल

पावन धारावाली गंगा यहां सिर्फ नदी नहीं, मां गंगा हैं। ऐसा माना जाता है कि यहां स्नान करने से पाप कटते हैं और आत्मा को शांति मिलती है। हर सुबह-शाम आरती की लहरें और शंख की ध्वनि आत्मा को भीतर तक झकझोर देती हैं।

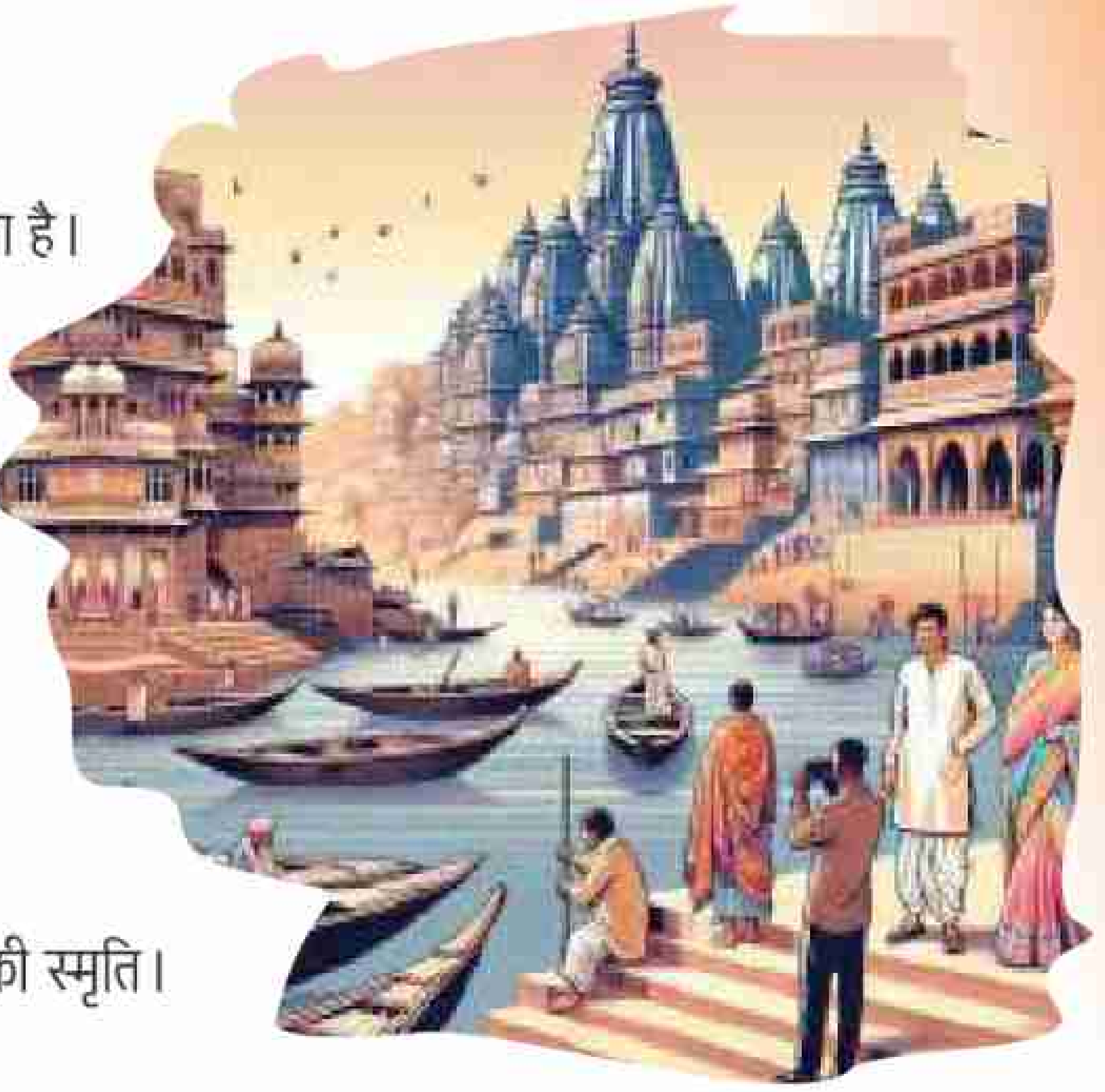

चौरासी घाट: 84 अनुभवों की परिक्रमा ।

चौरासी घाटों का समूह, हर घाट का अपना इतिहास और कथा है।

अस्सी घाट: साहित्य, कला और विचारों का संगम।

दशाश्वमेध घाट: गंगा आरती की दिव्य भव्यता।

मणिकर्णिका घाट: जीवन-मृत्यु के बीच की अंतिम कड़ी।

नमो घाट: नया लेकिन आध्यात्मिक रूप से गूंजता हुआ।

तुलसी घाट: संत तुलसीदास की भक्ति और रामचरितमानस की स्मृति।

जीवन और मृत्यु का संगम-

बनारस एकमात्र ऐसा स्थान माना जाता है जहां मृत्यु भी मोक्ष का मार्ग है। मणिकर्णिका और हरिश्चंद्र घाट पर चिता की अग्नि अनवरत जलती है, हमे यह याद दिलाती है कि मृत्यु भी एक यात्रा है, अंत नहीं।

संस्कृति, संगीत और साधना-

बनारस भारत की संगीत, नृत्य और शास्त्र परंपरा का गढ़ है। कबीर, तुलसी, भस्मराम, पंडित रवि शंकर, उस्ताद बिस्मिल्लाह खान जैसे रत्न इसी धरती से निकले हैं। हर गली, हर नुक्कड़, हर दरवाजा कोई कहानी कहता है।

ध्यान और दर्शन की भूमि-

यहां सिर्फ दर्शन की बात नहीं, जीवन के दर्शन की अनुभूति होती है। यहां आकर मन शांत होता है, प्रश्न मिटते हैं और केवल 'मैं' बचता है।

बनारस समय से परे है-

यह शहर ऐसा है जो समय को अपने अंदर समा लेता है। यहां एक साथ प्राचीनता और आधुनिकता, भक्ति और विद्रोह, शोर और मौन सब एक ही क्षण में साथ रहते हैं।

एक कोशिश जो जिंदगी को छू गई।

वशिष्ठ कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

रविवार का दिन था, सभी लोग अपने-अपने परिवार के साथ छुट्टी का आनंद ले रहे थे। करीब शाम के तीन-चार बज रहे थे और महालेखाकार आवासीय परिसर रायपुर के बच्चे अपने दोस्तों और सहेलियों के साथ खेल में मग्न थे। मैं भी घर पर आराम कर रहा था, तभी मेरी पत्नी दौड़ते हुए मेरे पास आईं, उनकी आंखों में घबराहट और चेहरे पर आंसू थे। उन्होंने कहा, अभी-अभी जो कॉलोनी में नए आए हैं, उनकी बेटी सेप्टिक टैंक में गिर गई है।

मेरा दिल धक् से रह गया। मैं बिना सोचे वहाँ भागा। टैंक के पास पहुँचते ही मैंने देखा कि भीड़ जमा थी। एक तरफ बच्ची की माँ चीख रही थी, उसकी पुकार में ऐसी पीड़ा थी जो सीधे दिल को भेद रही थी। दूसरी तरफ लोग बचाव की कोशिश में जुटे थे। उस माँ की बेबसी और टैंक में फंसी बच्ची की हालत ने मुझे मेरी बेटी की छवि दिखा दी। मैंने बिना हिचक टैंक में उतरने का फैसला किया।

यह कॉलोनी का मुख्य सेप्टिक टैंक था - गहरा, खतरनाक और बदबू से भरा। समाज की गंदगी और उससे जुड़ी घृणा का ख्याल मेरे दिमाग में नहीं आया। मैं बस उस बच्ची को बचाना चाहता था। पहली कोशिश में मैं टैंक के तल तक नहीं पहुँच पाया। साँसें फूल चुकी थीं, लेकिन हार मानना मेरे बस में नहीं था। दूसरी बार मैंने पूरी ताकत झोंक दी और आखिरकार उसे ढूंढ लिया। वह गुड़िया-सी बच्ची वहीं पड़ी थी, मानो आँख मिचौली में छिप गई हो। मैंने उसे बाहर निकाला और तुरंत अस्पताल की ओर भागा।

रविवार होने के कारण अस्पताल के डॉक्टर छुट्टी पर था। दूसरा अस्पताल भी निराशा लेकर आया। अंत में हम सरकारी अस्पताल पहुँचे। इस दौरान टैंक की गैस और गंदगी से मेरी तबीयत बिगड़ने लगी। एक दोस्त ने अपनी टी-शर्ट उतारकर दी और कहा, कपड़े बदल लो। मैंने कपड़े बदले, लेकिन मन का बोझ कम नहीं हुआ। थकान और हताशा के बीच मैं घर लौटा। तभी एक दोस्त का फोन आया। उनकी आवाज भारी थी, डॉक्टर ने जवाब दे दिया। देर हो चुकी है। यह सुनकर मेरे पैरों तले जमीन खिसक गई। उस बच्ची की मासूम तस्वीर मेरी आँखों में घूमने लगी। मैंने खुद को दोष देना शुरू किया - क्या मैं और कुछ नहीं कर सकता था? मैं जानता था कि मैंने अपनी जान जोखिम में डालकर कोशिश की थी, फिर भी यह नाकामी एक भारी बोझ बन गई।

उस दिन ने मुझे बहुत कुछ सिखाया। मैंने जाना कि हमारी हर कोशिश के बावजूद कुछ चीजें हमारे वश में नहीं होतीं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हमें कोशिश बंद कर देनी चाहिए। उस पल में मैंने न केवल एक बच्ची को बचाने की कोशिश की, बल्कि मानवता का एक उदाहरण भी पेश किया। यह कोशिश सिर्फ उस परिवार के लिए नहीं थी, बल्कि समाज को यह दिखाने के लिए थी कि करुणा और हिम्मत हर मुश्किल को चुनौती दे सकती है।

आज भी वह घटना मेरे दिल में बसी है। उसने मुझे शारीरिक और मानसिक रूप से मजबूत बनाया। लोग जिसे गंदगी कहते हैं, मैंने उसे तोड़कर एक जिंदगी बचाने की कोशिश की। यह अनुभव मेरे लिए गर्व की बात है। उस टैंक में शायद अनगिनत खतरे थे, लेकिन मानवता और करुणा ने उन्हें भी झुका दिया। आज मैं पहले से ज्यादा निडर और ऊर्जावान हूँ, और मुझे यकीन है कि यह ऊर्जा मुझे हमेशा दूसरों की भलाई के लिए प्रेरित करती रहेगी।

नमन तुझे माँ

यशेंद्र गुप्ता
सहायक पर्यवेक्षक

हमें छोड़ कर क्यों चली गई मां, वहां जहां से लाना संभव नहीं,
जहां से बात भी करने का अवसर नहीं,
क्या अपने बच्चों पर इतना भी विश्वास नहीं था माँ?

तब तो हम बहुत छोटे थे, थोड़ी प्रतीक्षा तो की होती माँ,
तुम तो बहुत आत्मविश्वासी थी, थोड़ी हिम्मत तो कर लेती माँ।

जो भी हुआ, उसका हमें अत्यन्त दुख है, तुम्हारे साथ जो हुआ, उसकी स्मृती है माँ,
किन्तु तब हम छोटे थे, समझ नहीं सके, कुछ समय तो और झेल लेती माँ।

कारण जो भी हो, इसकी जानकारी हमें नहीं,
थोड़ा सब्र तो किया होता, तुम्हारे बेटे तो हैं माँ,
दु:ख तो हमें बहुत है माँ, हम तेरे साथ ही खड़े रहते माँ।

आज तू नहीं है माँ, मैं क्या बताऊं, कुछ करने जाऊं, तो तेरे पांव कैसे छूऊं,
कुछ कर लिया तो तेरे साथ खुशी कैसे बाटूं माँ,
जीवन में तेरा प्रेम एवं आशिर्वाद कैसे पाऊं ?

तुम्हारे जाने के बाद जो सहा है हमने, वह सब बताना संभव नहीं है माँ,
पापा ने हमारा बहुत ख्याल रखा, अपनी क्षमता से अधिक किया है माँ।

तुम्हारे जाने के बाद, सबने लाभ उठाने का प्रयत्न किया है माँ,
लोग हम पर दया दिखाकर हमें कमजोर बनाने का प्रयत्न करते रहे माँ।

तेरे बिना परिवार तो रहा, किन्तु परिवार की भांति नहीं रहा,
लोग आज भी कहते हैं, परिवार के बारे में तुम्हें मालूम कहां।

तेरा ही प्रेम और आशिर्वाद था, जो हम यहां तक पहुंचे माँ,
यदि कोई त्रुटी हुई हो, तो क्षमा करना माँ,

तेरे सिद्धांत इतने मजबूत थे, उसी पर हम चलेंगे माँ।
नमन तुझे माँ, नमन तुझे माँ!

मैं बड़ा होकर माँ जैसा बनना चाहता हूँ

चित्तापुरी आयुष राव, कक्षा पाँचवी,
पिता-सी. कमलेश राव,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

नमस्ते, मेरा नाम चित्तापुरी आयुष राव है, मैं कक्षा पाँचवी का छात्र हूँ। मुझसे हमेशा सभी यह पूछते हैं कि मैं बड़ा होकर क्या बनना चाहता हूँ? मुझे कुछ लोगो ने विकल्प भी दिया जैसे कि मैं डॉक्टर बनूँ या फिर किसी खेल में अपना नाम रोशन करूँ। परन्तु मैंने कभी ऐसा नहीं सोचा की मैं बड़ा होकर क्या बनना चाहता हूँ। फिर एक दिन मेरे साथ एक ऐसी घटना घटी की जिससे मुझे पता चल गया कि मैं कैसा इंसान बनना चाहता हूँ। वही किस्सा मैं आप सभी के साथ साझा करना चाहता हूँ।

स्कूल की आखिरी घंटी बजी और मैं अपना बैग उठाकर गेट की ओर दौड़ा। माँ हमेशा मुझे लेने आती थीं, लेकिन आज वहाँ पापा की कार खड़ी थी। पापा कार के पास खड़े होकर मुस्कुरा रहे थे।
''पापा? आप यहाँ क्या कर रहे हैं?'' मैंने हैरानी से पूछा।
''आज तुम्हारी माँ की तबीयत ठीक नहीं है, बेटा, उन्होंने मेरे लिए दरवाजा खोलते हुए कहा। माँ को आराम की जरूरत है। तो आज तुम मेरे साथ ऑफिस चलोगे।''
''आपके ऑफिस? सच में? मेरा दिल खुशी से उछल पड़ा, जैसे मैंने फुटबॉल में आखिरी मिनट में गोल कर दिया हो।
'हाँ, लेकिन तुम्हें अच्छे से रहना होगा। मस्ती मत करना, ठीक है?''
मैं हंस पड़ा। नहीं पापा! मैं अच्छे से रहूँगा, वादा। कार में बैठते ही मेरे सवालों की बौछार शुरू हो गई। मेरे सवालों की बौछार शुरू हो गई। ''पापा, आपका ऑफिस कैसा है? क्या आपकी अपनी केबिन है? क्या लोग आपकी बात सैनिकों की तरह मानते हैं?''
पापा हँस पड़े। सैनिक? बिल्कुल नहीं। हम टीम की तरह काम करते हैं। मैं उन्हें बस मार्गदर्शन देता हूँ, और हम सभी मिलकर अपना काम पूरा करते हैं।''मैंने धीमें शब्दों में पूछा, तो आप गुस्सा करते हैं अगर वो गलती करें?

''नहीं, बेटा'', उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा। मैं गुस्सा नहीं करता, बस समझाता हूँ और ठीक करवाता हूँ। यही असली काम है।
मैंने गंभीरता से सिर हिलाया, जैसे कोई बड़ा राज पता चल गया हो। पापा का काम हमेशा मुझे रहस्यमयी लगता था। मुझे बस इतना पता था कि वो सुबह जल्दी जाते हैं और रात में थके लेकिन मुस्कुराते हुए लौटते हैं। आज मुझे उनके ऑफिस को देखने का मौका मिलने वाला था। जैसे ही हम ऑफिस पहुँचे, मैं ठिठक गया। वो इमारत बहुत बड़ी थी, काँच की दीवारें धूप में चमक रही थीं। लोग फॉर्मल कपड़ों में इधर-उधर जा रहे थे, फाइलें ले जा रहे थे या फोन पर बात कर रहे थे।

''वाह ''मैंने फुसफुसाकर कहा। आप इन सबके साथ काम करते हैं?
पापा हँस पड़े। ''हाँ, और ये सब अपने काम में माहिर हैं। चलो, अंदर चलते हैं।'' अंदर कदम रखते ही मुझे लगा जैसे कोई मशीन लगातार चल रही हो। कंप्यूटर की की-बोर्ड की खटर -पटर बारिश की बूंदों जैसी लग रही थी। फोन बज रहे थे, प्रिंटर की आवाज आ रही थी, और लोग धीमी आवाज में किसी गंभीर बात पर चर्चा कर रहे थे। पापा की टेबल सजी हुई थी, लेकिन उस पर ढेर सारी फाइलें और रंग-बिरंगे स्टिकी नोट्स थे। यहाँ बैठो, पापा ने पास वाली कुर्सी खींचते हुए कहा। मैं अपना काम खत्म कर लूँ, तब तक तुम ड्रॉइंग कर लो। लेकिन मुझे ड्रॉ नहीं करना था। मैं देखना चाहता था कि पापा ये सब कैसे करते हैं।

सर, क्या ये रिपोर्ट ठीक है? एक अंकल ने फाइल लाकर दी। पापा ने उसे देखा, कुछ शब्द बदले और बोले, गुड, बस ये नंबर सही कर दो, फिर तैयार है। फिर दूसरे अंकल आए, सर, ये ड्राफ्ट भेज दूँ? अभी नहीं, पापा ने लाइन पर इशारा करते हुए कहा, ये वाक्य ठीक से समझ नहीं आ रहा, पहले इसे ठीक करो। मैं ये सब देखकर हैरान था। वो गुस्सा नहीं करते थे, बस सबको समझाते थे।
पापा, मैंने धीरे से कहा, आप तो फुटबॉल टीम के कैप्टन जैसे हो, सब आपको पास देते हैं और आप गोल करते हो। पापा हँस दिए। कुछ ऐसा ही है, बेटा। काफी समय बाद, पापा ने अंतिम डॉक्यूमेंट तैयार कर लिया, बस इसे सर को भेजना है, उन्होंने माउस क्लिक किया। लेकिन तभी उफ्फ! इंटरनेट बंद हो गया।

ओह नहीं, वाई-फाई चला गया! किसी ने जोर से कहा। दूसरे अंकल ने कहा, अब तो कुछ नहीं कर सकते।

और अचानक ऑफिस का माहौल बदल गया। सबका काम रुक गया। लोग अपनी कुर्सियों पर पीछे झुक गए, बातें करने लगे। जैसे किसी ने ऑफिस पर 'पॉज' का बटन दबा दिया हो। पापा, मैंने धीरे से पूछा, क्या इंटरनेट नहीं है तो काम बंद हो जाता है?

ज्यादातर काम हाँ,उन्होंने कंधे उचका कर कहा। अब सबकी नजर मुझ पर थी।

तो बेटा, तुम स्पोर्ट्स खेलते हो? किसी ने पूछा। मैं गोलकीपर हूँ, मैंने गर्व से कहा, पिछले हफ्ते मैंने पेनल्टी रोककर मैच जिताया। सबने तालियाँ बजाई। पापा ने मेरे कंधे पर हाथ रखा, यही तो मेरा बेटा है। बातों ही बातों में समय निकल गया। सभी इंटरनेट आने का इंतजार कर रहे थे तभी पापा ने घडी की ओर देखा, ऑफिस का समय भी खतम होने वाला था।

तभी अचानक-धमक!-बिजली भी चली गई।

पावर कट! किसी ने कहा। अचानक से सन्नाटा छा गया।

सर, अब कैसे करें यह ड्राफ्ट कैसे भेजे?, किसी ने पापा से पूछा। तभी किसी ने सुझाव दिया, सर, यह कल सुबह ही भेजते हैं, पता नहीं बिजली कब आएँगीं। ठीक है, पापा ने कहा। कल सुबह आते ही सबसे पहले यह काम करते हैं।

यह सुनते ही सभी धीरे धीरे अपना सामान बाँधने लगे, जैसा सभी ने सोचा था वैसा ही हुआ, शाम को ऑफिस टाइम खत्म होने पर भी बिजली नहीं आई। सभी से मिलकर मुझे अच्छा लगा, लेकिन अंदर एक सवाल था। क्या यही काम है ? बिजली या इंटरनेट न हो तो सब रुक जाता है?

घर पहुँचकर मैं सोच रहा था कि घर में भी सब अंधेरा होगा। मैं सही था, बिजली नहीं थी, फिर भी खाने की खुशबू आ रही थी। लिविंग रूम साफ था, मेरी यूनिफॉर्म धुली हुई थी, जूते भी चमक रहे थे। यह देख कर मैं आश्चर्य था। माँ, आपने बिना बिजली के खाना बनाया? मैंने हैरानी से पूछा। बिल्कुल, माँ ने माथे का पसीना पोंछते हुए कहा। खाना तो बनना ही चाहिए, चाहे बिजली हो या न हो उनकी बात दिल में उतर गई। पापा के ऑफिस में सब रुक गया था, लेकिन माँ नहीं रुकीं।

खाने पर मैं पुरे दिन में क्या-क्या हुआ उसके बारे में सोचता रहा। फिर मैंने माँ की ओर देखा उनका चेहरा थका हुआ था। पापा, मैंने कहा, मुझे लगता है, माँ आपसे ज्यादा काम करती हैं। पापा ने भौंहें उठाईं, अरे वाह, ये कब पता चला? सच में, मैंने कहा। बिजली या इंटरनेट नहीं होने पर आपका काम रुक गया, लेकिन माँ ने सब कर लिया। अगर माँ न करतीं, तो आज रात हमें खाना भी नहीं मिलता। पापा मुस्कुराए और बोले, सही कह रहे हो बेटा। तुम्हारी माँ यह सब अकेले ही करते है। माँ हंसी। तुम दोनों मुझे छेड़ रहे हो। नहीं माँ, मैंने गंभीरता से कहा। आप सुपर हीरो हो, आपका 'ऑफ बटन' नहीं है।

माँ की आँखों में चमक आई, शायद वो खुश थीं कि मैंने उनके काम के बारे में समझा। रात को बिस्तर पर लेटे हुए मैंने सोचा, मैं हमेशा सोचता था हमारे परिवार के हीरो पापा हैं, क्योंकि वो हमारे लिए पैसे कमाते हैं। लेकिन माँ ? वो हर दिन काम करती हैं, चाहे कुछ भी हो। ना बिजली, ना इंटरनेट कुछ भी उन्हें रोक नहीं सकता। मैंने पहले कभी यह ध्यान नहीं दिया, अब पता चला। मैंने मन में ठान लिया-मैं माँ की मदद करूँगा।

कम से कम अपना कमरा साफ करूँगा, अपना स्कूल बैग खुद पैक करूँगा, फुटबॉल के जूते भी धो दूँगा। अगले दिन मैं जल्दी उठ गया और नाश्ते की टेबल लगा दी। माँ रसोई से बाहर आई तो मुझे देखकर चौंक गई। ये सब क्या है? इतनी जल्दी क्यों उठ गए?

मैंने सोचा आपकी मदद करूँ, मैंने मुस्कुरा कर कहा। क्योंकि आप असली हीरो हो।

वो हँस दीं और मेरे बाल सहलाए। तुम बड़े हो रहे हो बेटा। उस दिन मैंने सोच लिया भले मैं बड़ा होकर डॉक्टर बनूँ या फुटबॉलर लेकिन काम अपनी माँ की तरह ही करूँगा ताकि कोई भी आपदा आ जाये, मैं न रुकूंगा।

अपना मजा है

सचिन
लेखापरीक्षक

कोई था, कोई है, कोई होगा, हमारा क्या है?
पर मेरा तुम्हारा होने का अपना मजा है।

अपने जब कब्र खोदने में लगे है,
तो गैरों के कंधे पर जाने का भी अपना मजा है।

यूँ तो हमने एक पूरा बगीचा बना रखा है अपने बाग में,
पर वो पीपल का पेड़, जिसे हमने अपने हाथों से सींचा,
उसकी छावों में बैठने का अपना मजा है।

तैरने को तो लोग तैरते हैं, नदियों और तालाबों में भी
पर समंदर में तैरने का भी अपना मजा है।

पढ़ने को तो लोग पढ़ते हैं मुझे किताबों कि तरह
पर मुझे अखबार कि तरह पढ़ने का अपना मजा है।

करते है जवान अपने-अपने मुल्क की हिफाजत सरहदों में रहकर
पर अभिनन्दन कि तरह सरहदें पार कर जज्बे दिखाने का अपना मजा है।

चूमते है लोग दोस्ती में बढ़ते हुए हर एक हाथ,
पर दुश्मनी में भी गले लगाने का अपना मजा है।

झाँकतें है लोग इक-दूसरे के गिरह्बान में,
पर अपने गिरह्बान में झाँकनें का अपना मजा है।

सुधर जाते हैं लोग सभी गुरुर टूटने पर,
वक्त-बे-वक्त बिगड़ने का अपना मजा है।

तलाशते रहते हैं लोग सभी किसी खास की आस में,
पर किसी कि तलाश न करने का भी अपना मजा है।

और कोई था कोई है कोई होगा, हमारा क्या है?
पर मेरा तुम्हारा होने का अपना मजा है।

आईना में

हरेन्द्र कुमार पटनायक
सहायक पर्यवेक्षक

नादान आईने को क्या खबर कुछ चेहरे,
चेहरे के अन्दर भी छुपे होते हैं।

दूरियों में ही परखे जाते है रिश्ते,
नजरों के सामने तो सब वफादार ही होते हैं।

यहाँ हर कोई रखता है, गैरों के गुनाहों की फेहरिस्त,
अजब फितरत है, कोई आइना नहीं रखता।

किसी व्यक्ति को तब गलत ठहराना जब आप उसके बारे में सब कुछ जानते हो
न कि तब, जब केवल दूसरों से सुना हो।

समस्याएं लम्बे समय तक नही रहती, वो हमारी जिन्दगी की अनुभव पुस्तिका पर
हस्ताहर करके चली जाती है।
फिर जो शेष रहता है, वो होता है सुखद, शांत और आपका सुनहरा भविष्य।

जिंदगी

लम्हों की एक किताब है जिन्दगी।
सांसों और ख्यालों का हिसाब है जिन्दगी।
कुछ जरूरतें पूरी और कुछ ख्वाहिश अधुरी,
बस इन्हीं सवालों का जवाब है जिन्दगी।

जब दीवारों में दरार पड़ती है, तो दीवारें गिर जाती है
लेकिन जब रिश्तों में दरार पड़ती है, तो दीवारें खड़ी हो जाती है।

जिंदगी में इन पाँच चीजों को कभी मत तोड़ना
विश्वास, वादा, रिश्ता, दिल और दोस्ती
क्योकि जब यह टूटते है तो आवाज नहीं होती,
लेकिन दर्द बहुत होता है।

मेरे मित्र चाहते थे कि मैं मोती बनूं, लेकिन मैने धागा बनना पसंद
जिम्मेदारी बांधे रखने की थी, मैंने एक-एक मोती को संभाला।

अद्भुत हिमाचल

दिव्या साहू
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

हिमाचल की यात्रा का वृतांत लिखते हुए अत्यंत रोमांच की अनुभूति हो रही है। 24 मई 2025को हम हिमाचल प्रदेश की यात्रा पर निकल रहे थे उस दौरान मन थोड़ा संशय की स्थिति में भी था क्योंकि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान चंडीगढ़ एयर पोर्ट भी ड्रोन आक्रमण का शिकार हुआ था और हम वही से शिमला के लिए सड़क मार्ग से जाने वाले थे। शिमला पहुँचते-पहुँचते हमें रात को 9 :15 हो चुके थे अगले दिन बिटिया का कत्थक नृत्य का कार्यक्रम था। शिमला का दृश्य अत्यंत अद्भुत था। पहाड़ी पर बसाये शहर यद्यपि थोड़ा भीड़-भाड़ वाला था किंतु घर ऐसे लगते मानो पहाड़ पर चिपक कर अधर में लटके हो। पहाड़ों के बीच से निकलते हुए सुबह-सुबह की गर्म किरणे बारीश की ठंडकता को शिथिल कर ही थी। पहाड़ी के बीच बीच में तैरते हुए बादल हरी भरी वादियों के बीच मनोहर लग रहे थे।

हमारे रहवास के खाई वाले निचले हिस्से में अखरोट और खूबानी के पेड़ स्वत :उग आए थे जो उनके फलों से उन पेड़ों का रहस्योद्घाटन कर रहे थे। हमारा कमरा भूतल से 3 मंजिल नीचे था और पहाड़ी रास्ता होने के कारण भूतल तक पहुँचने में भय सहित रोमांचक एहसास होता था। मई के माह में जब उत्तर-मध्य भारत में खूब गर्मी पड़ती है तब हिमाचल की पहाड़ियों में आनंद और उत्सव का माहौल होता है। यह तथ्य वहाँ की वादियों, पंछियों, फूल-पौधे, फलों के पेड़ स्वतः ही उजागर करते हैं। बिटिया का कार्यक्रम भी अत्यंत आनंददायी था। वह प्रथम आने पर अत्यंत प्रसन्न थी। रात को जब हम कार्यक्रम से वापस लौट रहे थे तो हमने चौरी और खूबानी के ताजे फल लिए जो कि बहुत ही अद्भुत स्वाद वाले थे।

अगले दिन हम ने माँ ज्वाला देवी के दर्शन किये जहाँ पर माँ जगदम्बा ज्वाला के रूप में साक्षात विराजमान है। वहाँ से हम धर्मशाला पहुंच गए है जोकि बहुत ही खूबसूरत शहर है। यहाँ अनेकानेक बौध्द भिक्षुक दिखे क्योंकि तिब्बत के धर्मगुरु दलाईलामा जी का संस्थान है। यहाँ अत्यंत प्रसिद्ध बौध्द मठ एवं मंदिर है। वहाँ दिवारों पर अंकित चित्रकारी देखते ही बनता है। धर्मशाला में हमने भगवान शिवजी के भागसूनाग मंदिर दर्शन किए। भाग सूनाथ झरना तक पहुँचने हेतु अत्यंत संकरा और पहाड़ी और खाई वाले रास्ते से गुजरना था। अत्यंत सँकरा, पहाड़ी और खाई वाले रास्ते पर पद यात्रा करते हुए भाग सूनाथ के सुंदर झरने का दर्शन हुए। पहाड़ों के बीच से झरने का कलकल ध्वनि वातावरण को गुंजायमान कर रहा था। भागसूनाग झरना एवं आस-पास का दृश्य अत्यंत रमणीय था। वहां हम लोगों ने रोमांचकारी क्रिया 'जिपलाइन' किया जिसमें नदी के उपर से रस्सी से जिप से लाँघना था। भागसूनाग झरना देखने के पश्चात हम धर्मशाला में बौध्द मंदिर दर्शन हेतु गए, जहाँ अनेकानेक बौध्द भिक्षुओ के दर्शन हुए।

रोपवे मे बैठकर ऊपर से पक्षी के समान नीचे धर्मशाला शहर के हरी भरी वादियों को हल्की बारिश के बीच निहारना मन को मंत्रमुग्ध कर रहा था। रोपवे से लौटने पर कैफेटेरिया में हम नेचीन द्वारा तिब्बत आक्रमण होने पर तिब्बती लोगों को भारत प्रवास की करुण कहानी एक लघु किन्तु वास्तविक फिल्म के रुप में देखी। वहाँ से देवदार के घनेरे पेड़ और चाय बागान भी गए। अगले दिन हम कांगड़ा के थोड़े पठारी मैदानी क्षेत्र में आगे जहाँ पहाड़ों जैसी ठंडकता नहीं थी अपितु थोड़ी गर्मी थी। हम ने शक्तिपीठ माँ ब्रजेश्वरी देवी (कांगड़ादेवी) मंदिर, शक्ति पीठ बगला मुखी देवी मंदिर और शक्तिपीठ चिंतपूर्णी (माँछिन्न मस्तिका) देवी मंदिर दर्शन किए। चिंतपूर्णी शहर से अब हम कुल्लू-मनाली के लिए निकल पड़े जो कि बहुत थकावट भरा सफर था। 7-8 घंटे का टैक्सी का सफर वास्तव में कभी कभी पीड़ा दायक और बोझील लगने लगता है। पर यह क्या! टैक्सी वाले भैया ने तो कुल्लू के सेब बागान में उतार कर और रोमांचक रिवर राफ्टिंग और पैराग्लाइडिंग करवा कर पूरा बोझील (बोरडम) खत्म कर दिया।

रिवर-राफ्टींग ऐसा आनंद दायी, मनोरंजक, रोमांचकारी क्रीड़ा है जिसमें आप व्यास नदी के ठंडे पानी से भीगे बीना नहीं रह सकते। व्यास नदी के उफनते, लहराते, बलखाते पानी में नौका विहार (रिवर-राफ्टींग) करना हमारे लिए एक दम अनूठा अनुभव था। क्रिड़ा करते समय तो डर और रोमांच लगता है किंतु उन्हीं के विडियो जब घर आकर देखो तो बड़ा खौफनाक भी लगता है। छः किलोमीटर व्यास नदी में रिवर राफ्टींग पश्चात अब बारी थी पैराग्लाइडिंग की। इसके लिए हम चारों कई किमी ऊँचे पहाड़ी पर गए। पहाड़ के उबड़ खाबड़ रास्तों पर गाड़ी में सवारी करना अपने आप में किसी एडवेंचर से कम नहीं था। पहाड़ी के कई किमी ऊँचाई से सीधे गहरे खाई की ओर दौड़ लगाना फिर अचानक से हवा में उड़ जाना, यही पैराग्लाइडिंग का रोमांच है। इतने ऊँचाई से नीचे की ओर देखने पर घर, सड़क, नदी कितने

छोटे लगते हैं यह तो उस रोमांचकारी क्रिड़ा करने पर ही पता चलेगा पर हाँ बाद में विडियो देखने पर पता लगता है किये हमने कैसे कर लिए? हमारी बिटिया जो मात्र 10 साल की है उसका पैराग्लाइडिंग का विडियो परिवार जन देखकर अत्यंत प्रसन्न होते है और उसकी बहादूरी के कसीदे पढ़ते हैं। पैराग्लाडिंग क्रिड़ा में उड़ने के पूर्व तक काफी घबराहट होती है परंतु उड़ने के पश्चात मनोहारी लगता है। ऐसा प्रतीत होता है मानो हम पंछी बन गए हों और नीचे को जानने-समझने की कोशिश करते हैं । पैराग्लाइडिंग करते करते जब नीचे मैदान में आए तो वहाँ हमने अनार और नाशपाती के बगीचे देखे और उन पेड़ों में फले छोटे छोटे फलों को भी देखा। सीढ़ीदार खेतों को मेरी बेटी ने केवल चित्रों में देखा था पर वहाँ जाकर उसका अनुभव भी लिया।

अगले दिन हम लोग रोहतांग दर्रा घूमने हेतु निकल पड़े। वहाँ पहुचने से पूर्व हमे अटल टनल (सुरंग), रोहतांग से गुजरना था। ये सुरंग सबसे ऊंचाई पर बना विश्व का सबसे बड़ा और आधुनिक सुरंग है। इसी बीच हम सोलंग घाटी से गुजरे, जहाँ की सुंदरता की जितनी भी प्रशंसा करूँ, कम ही लगता है। देवदार-फर-स्प्रूस के पेड़ों के बीच, ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों के बीच से नदी को बहते हुए देखना किसी सपने से कम नही लगता। हरी-भरी वादियाँ, नीले आसमान, बर्फ से ढके पहाड़ियाँ और कल-कल करती छोटी-बड़ी नदियाँ यही है सोलंग घाटी की व्याख्या। जिनको केवल चित्रों मे या फिल्मों में देखा करते थे, उन्हे हकीकत में देखना अत्यंत मनोहारी लगता है।

रोहतांग दर्रा पहुँचने हेतु काफी लंबी पहाड़ी रास्तों से गुजरना होता है। वहाँ पहुँचकर हम सभी बर्फ से बहुत खेले।

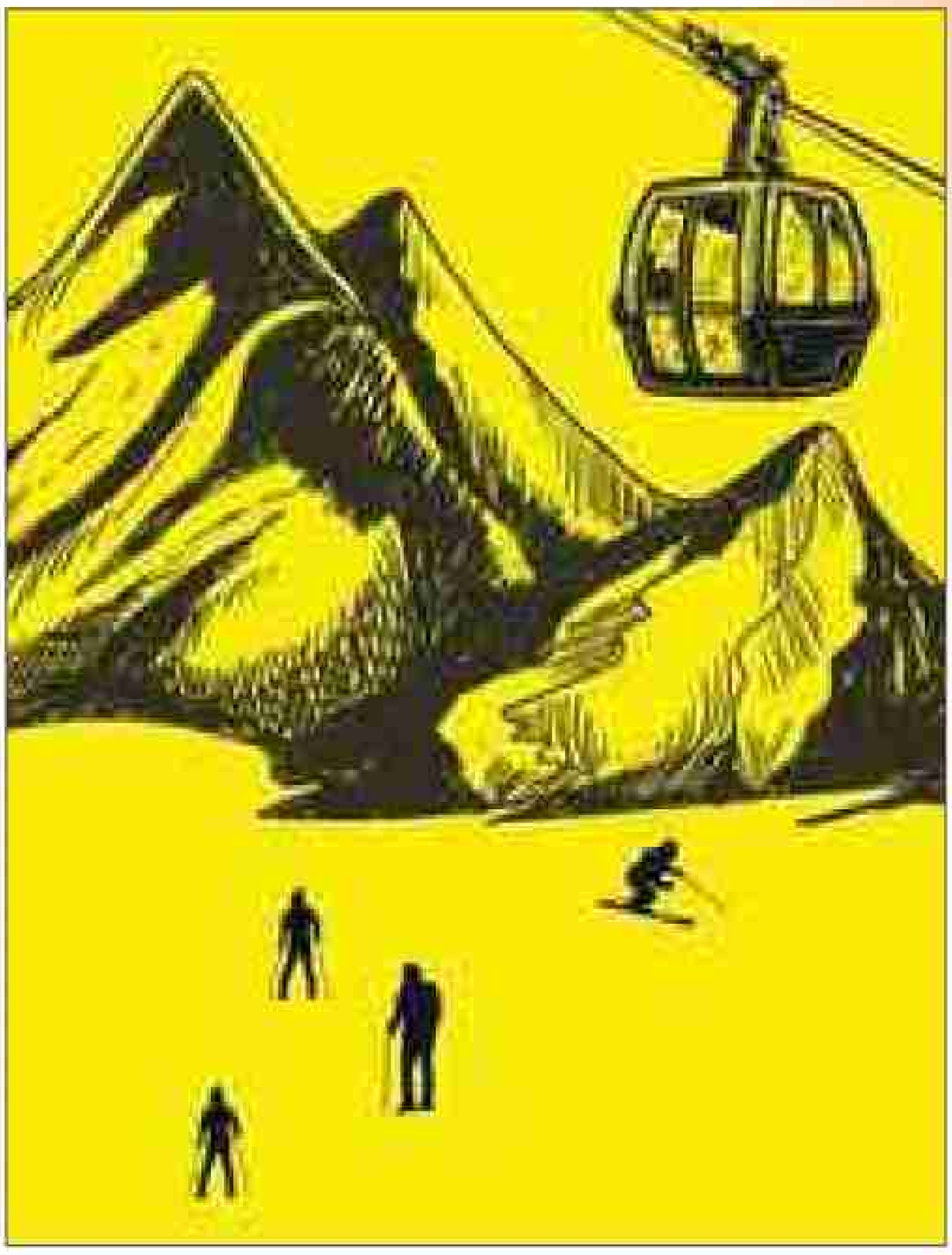

बर्फ के गोले बनाकर एक दूसरे पर फेंकना, बर्फ मे लोटकर फिसलकर नीचे आना और हिमपुरुष बनाना-जैसी अनेक क्रियाएँ करना अत्यंत आनंददायी था। रोहतांग दर्रा में हमने याक (पहाड़ी गाय) की सवारी किए। याक अत्यंत सुंदर जीव है जिसके बल काफी बड़े होते है जिससे उनकी आंखे ढक सी जाती है। रोहतांग दर्रा पहुँचकर तब समझ में आया की दर्रा क्या होता है जब हम पहाड़ों के दूसरी ओर नीचे की ओर घाटी से उतरे। अगले दिन हम सब सुबह सवेरे 4 बजे उठकर मनाली से चंडीगढ़ आ गए जहाँ से हमे रायपुर के लिए हवाई यात्रा प्रारम्भ करनी थी। घर वापस आकर बच्चे बहुत खुश थे।

वास्तव में हिमाचल की यात्रा अत्यंत मनोहारी, रोमांचकारी और तसल्ली भरा था।

हिन्दी का प्रयोग करने में गौरव का अनुभव करें

जयदीप दहिया
डीईओ

राजभाषा का प्रयोग करके देश का हर नागरिक स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता है सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग संविधान सम्मत तो है ही, साथ ही राजभाषा अधिनियम 1963 (यथा संशोधित) तथा राजभाषा नियम 1976 (यथा संशोधित) द्वारा सम्पोषित तथा समय-समय पर भारत सरकार द्वारा जारी आदेशों के आधार पर पल्लवित एवं पुष्पित भी है। सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के निमित्त भारत सरकार द्वारा विविध प्रकार के प्रोत्साहन और पुरस्कार घोषित किए हुए हैं। किंतु ये वैधानिक व्यवस्थाएं, प्रोत्साहन, पुरस्कार तथा अन्य सुविधाएं मात्र साधन हैं। साधनों का लाभ उठाकर समुचित कार्य करना अधिकारियों और कर्मचारियों की रुचि पर निर्भर करता है।

रुचि या इच्छा के अभाव में किसी भी कार्य का करना या होना असम्भव ही है। फिर यह रुचि या इच्छा किसी के कहने पर बाहर के किसी साधन से पैदा नहीं की जा सकती। बाहर से तो सहयोग ही मिल सकता है। रुचि या इच्छा तो व्यक्ति को आन्तरिक भावना से ही पैदा होती है। आन्तरिक भावना के लिए मानसिक बदलाव आवश्यक है और उसके लिए तद् विषयक चिन्तन करके अपने पूर्व चिन्तन में तनिक-सा बदलाव लाने से ही अंग्रेजी की अपेक्षा हिन्दी की ओर झुकाव बढ़ सकता है। झुकाव होने से रुचि बढ़ सकती है और रुचि होने पर सरकारी और निजी, सभी कार्यों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाया जा सकता है। मुख्य प्रश्न रुचि या इच्छा का है और यह व्यक्ति को स्वयं ही अपने अन्दर पैदा करनी होती है।

सरकारी कार्यों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने का दायित्व किसी व्यक्ति, संस्था अथवा वर्ग विशेष का नहीं बल्कि देश के कोटि-कोटि नागरिकों का है। ऐसा करके जहाँ एक ओर संवैधानिक और प्रशासनिक व्यवस्थाओं का अनुपालन किया जा सकता है। वहीं दूसरी ओर स्वाधीन देश के प्रबुद्ध नागरिक के कर्तव्य का निर्वाहन भी किया जा सकता है। अपने देश की राजभाषा का प्रयोग करके सभी को गौरव का अनुभव होना चाहिए। देश के हर नागरिक से यही अपेक्षा की जाती है कि वह अपनी भाषा का प्रयोग करके न केवल उसका समुचित सम्मान करेगा वरन् स्वयं को भी गौरवान्वित अनुभव करेगा।

आइये! हम सब मिलकर हिन्दी का प्रयोग बढ़ाएं :
किसी भी स्वाधीन राष्ट्र की पहचान के लिए राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगान और राष्ट्र की राजभाषा इन तीन चिह्नों का महत्व निर्विवाद है। हमने अभी-अभी इस वर्ष राजभाषा विभाग स्थापना की हीरक जयंती मनायी है। समय आ गया है कि अब यह विचार किया जाए कि अर्द्ध शताब्दी के इस कालखण्ड में हमने अपने राष्ट्र की पहचान बनाने के लिए क्या किया? भारत के संविधान में इन तीनों के लिए जो व्यवस्थाएं की गई हैं, उन्हें साकार करने की दिशा में हम कहाँ तक सफल हुए हैं ? यदि नहीं हुए हैं, तो क्यों?

समय-समय पर समाचार-पत्रों में राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान के अपमानों की घटनाएं प्रकाशित होती रहती हैं। उन घटनाओं ने इस जनता के अन्तर्तम को भेद भले ही दिया हो, किन्तु स्थिति जस की तस ही रही है। जहाँ तक राष्ट्र की राजभाषा का प्रश्न है, उसकी तो बात ही क्या की जाए ?

सरकार की ओर से राष्ट्र की राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के लिए आदेश अनुदेश, पुरस्कार, प्रोत्साहन बहुत से हैं। किन्तु इसके प्रयोग की प्रगति के लिए यदि शून्य की स्थिति से आगे देखा जाए, तब तो हुई है, पर क्या उस पर गर्व किया जा सकता है? यदि नहीं, तो इसके लिए उत्तरदायी कौन ? उत्तरदायी तो हम सभी विशेषकर 60 से 70 करोड़ हिन्दी भाषी, चाहे वे राजनीतिज्ञ हों या समाज सुधारक, सरकारी और गैर-सरकारी अधिकारी हो या कर्मचारी, व्यापारी हों या उद्योगपति विद्यार्थी हो या अध्यापक अथवा अन्य कोई। इनमें से कितने लोगों के मन में अपनी भाषा के प्रति लगाव है, कितनों के मन में इसके लिए कुछ कर गुजरने की तमन्ना है और कितने इसका प्रयोग करके अपने को गौरवान्वित समझते हैं?

किन्तु किसी को उत्तरदायी बना देने मात्र से कोई भी काम सकारात्मक रूप से होने वाला नहीं है। अपने राष्ट्र की राज भाषा के प्रयोग को बढ़ाने के लिए हम सभी देशवासियों को राजर्षि टण्डन, देशरत्न राजेन्द्र बाबू, सेठ गोविन्ददास, प्रकाशवीर शास्त्री, लक्ष्मीनारायण सुधांशु, घनश्यामदास गुप्त, मोरारजी भाई जैसे महान मार्गदर्शकों के समान हृदय में निष्ठा, मन में तड़प और मस्तिष्क में चिंतन की स्थिति लानी होगी। सफलता दूर नहीं रहेगी, वह निश्चित रूप से हमारे चरण चूमेगी, यदि हम सब इस दृष्टि से आगे बढ़ेंगे।

बीतता समय

शुभम प्रभात
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

ट्रेन ने उस दिन तो गजब ही कर दिया, पौने चार बजे ही पहुँच गयी। पहले तो कभी वक्त पर नहीं पहुँची, उसी दिन न जाने क्या आफत हुई। दोस्त को फोन करना भी ठीक न था। रात के बाद और सुबह के पहले का यही वक्त तो होता है जब इंसान स्वप्न की स्वच्छंद दुनिया में खोया हुआ होता है।

सोचा, कुछ घण्टे स्टेशन पर ही काटे जाये फिर दोस्त को बुलाया जायेगा। इसी सोच के साथ एक बंद पंखे की नीचे, एक उम्मीद के साथ कि शायद ये पंखा चल पड़े, बैठ गया। हालांकि मौसम में ठंडक थी। पिछली रात जम कर बारिश हुई थी और अभी भी रह-रह कर बूंदा-बाँदी हो रही थी। सागर, एक छोटा स्टेशन है, यहाँ कम गाड़ियाँ ही रुकती हैं और इस पहर लोग भी कम ही रहते हैं स्टेशन पर। पर प्लेटफार्म पूरा खाली न था, मच्छरों का जमावड़ा पूरे प्लेटफार्म पर था, जैसे उनका कोई पर्व हो, जिसके जश्न का आलम कुछ ऐसा था कि रह-रह कर मैं भी नृत्य की मुद्रा में आ जाता था और जोर-जोर से ताली बजाता हुआ प्रतीत होता था। मुझसे कुछ दूर एक हाँथ में गठ्ठर और एक हाँथ में अपने दूध पीते बच्चे को लिए वो महिला मेरी तरफ ही देख रही थी। मेरी नजर उस पर पड़ी तो उसने झिझकते हुए मुँह फेर लिया। दो पल के नेत्रों के उस संवाद के बाद मैं सोच में पड़ गया, कि क्या प्रकृति द्वारा भिगोये इस पूरे दृश्य को ये महिला अपनी उन सजल आँखों से उसी प्रकार देख रही है जैसा कि मैं देख पा रहा हूँ। इतनी नम आँखों से तो ये सारा संसार उसे डूबा हुआ प्रतीत हो रहा होगा।

दुख इस संसार का वो कठोर सत्य है जिसका स्वाद किसी को पसंद नहीं, पर भोगना सभी को है। पर बुरे समय की एक बात यह अच्छी है कि इसे बीत जाना है। और मन को दिलाशा भी यही सोच के दिया जाता है। पर उन लम्हों का क्या जिनका सामना उनके बीत जाने तक करना ही है? उन पलो का क्या जिनमे रूह चीखती तो है पर न जाने वो क्या बोझ है जिसके निचे वो चीख दबी रह जाती है? बस उसका प्रतिबिम्ब लाचार चक्षुओं में झलकता रहता है।

वो महिला उसी दशा में बेचैन बैठी रही। धीरे-धीरे समय कटा और दोस्त का फोन आया की वो दस मिनट में स्टेशन आ रहा है। मैं स्टेशन से बाहर आके इंतजार करने लगा। उजाला हो चूका था। साइकिल-रिक्सा, टेम्पुओं का आवागमन चालू हो गया था। मुझे बाहर ऑटो वालो ने घेर लिया।

कहाँ चलना है साहब...चलो हम छोड़े देते हैं...सिविल लाइन छोड़ देंगे 60 रूपए लगेंगे...। मैंने भी अकड़ कर बोला -अरे भई घर है मेरा...भाई गाड़ी लेके आ रहा है...तुम लोग परेशान न हो ज्यादा...। और मेरे चेहरे पे व्यंग्यात्मक मुस्कराहट छा गयी...60 रुपये लगेंगे...।

कुछ देर में वो महिला भी अपने बच्चे और गठ्ठर के साथ डरी- सहमी सी बाहर आ गयी। मुझे छोड़ ऑटो वालो ने उसे घेर लिया। कहाँ जाना है...। उस महिला ने कुछ न बोला। किसी ने फिर तेज आवाज में पूछा...कहाँ जाना है...। उस महिला से धीरे से बोला ''पता नोई बाबूजी...।''

पता नहीं...?? ट्रेन में बैठ के आई है कहीं तो जाना होगा न...?? ''संगे बारो ने कई थी सागर उतर जइय्ये...हम उतई मिल्हे... पर कोउ दिख नई रओ है हमाये संग्गे बारो...।'' उसके आँखों की नमि उसके गले में उतर आई थी। पर यहाँ किसी काम से तो आई होगी...या ऐसे ही...?''ठेकेदार ने बुलाओ है पुल को काम है...।

मैं उस महिला की कहानी सुन ही रहा था कि मेरा दोस्त सामने से आता हुआ दिखा। गाड़ी में बैठ उसके साथ वहां से निकल गया। जब मोड़ से मैंने वापस मुड़ के स्टेशन की ओर देखा तो वो महिला वहीँ जमीन पर सर पे हाँथ रखे बैठी थी और उसके आस-पास गिद्ध हंसी ठिठोली कर रहे थे।

दोपहर को प्री-इंजीनियरिंग टेस्ट देते समय भौतिकी के कठिन सवालो के बीच उस महिला व उसके बच्चे का चेहरा अनायास ही सामने आ जाता था। मानव जीवन में हर किसी को समाज में उसकी स्थिति के हिसाब से संघर्ष करना पड़ता है। हर किसी के हिस्से में दु:ख-सुख बदे हुए हैं। हालांकि समय के साथ मन के भीतर के द्वन्द्व से परे, होंठों पर विपरीत भावनाओं की प्रदर्शनी लगाना मनुष्य सीख ही जाता है और आगे बढ़ता जाता है।

मेरा अच्छा वक्त तो नब्बे अंक पाकर, किसी सरकारी कॉलेज में दाखिला लेने से आ सकता था, पर उनका क्या जिन्हें उनकी मंजिल का पता तक न मालूम हो, किस राह जाना है उसकी खबर तक न हो। खैर, जो भी हो मेरे नसीब में वो 90 नंबर तो नहीं लिखे थे। पर फर्क भी क्या पड़ता है... अच्छा समय आ भी जाता तो उसे कभी न कभी तो बीत ही जाना था।

योग कर्मसु कौशलम्

के.पी. संतोष
पर्यवेक्षक

योग प्राचीन भारतीय परंपरा एवं संस्कृति की अमूल्य देन है। सिंधु-सरस्वती सभ्यता के जीवाष्म अवशेषों में प्राचीन भारत में योग की मौजूदगी का प्रमाण मिलते हैं। सार्वभौमिक चेतना के साथ व्यक्ति गत चेतना को जोड़ने वाला योग भारतीय इतिहास में ऋग्वैदिक काल से विद्यमान है।

भगवत-गीता में भगवान श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन को उपदेश में योग को चार भागों में वर्णित किया गया है – ज्ञान योग, भक्ति योग, कर्म योग और क्रिया योग।

(1) **ज्ञानयोग :** यह अंतरात्मा को साक्षी मानते हुए मन से ध्यान लगाने और मन पर नियंत्रण पाने की तकनीक सिखाता है। यह किसी व्यक्ति को आत्मज्ञान का बोध कराने, ध्यान केंद्रित करके मन और भावनाओं पर नियंत्रण करने तथा सहिष्णुता आत्मविश्वास जागृत करना सिखाता है।

(2) **भक्ति योग :** यह ईश्वर प्रेम व भक्ति के माध्यम से आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने की किया है।

(3) **कर्म योग :** यह निस्वार्थ गतिविधियों और कर्तव्य को करने तथा फल की चिंता किए बिना कार्य करना सिखाता है।

(4) **क्रिया योग :** इसके अंतर्गत शारीरिक मुद्रा, सांस पर नियंत्रण करने व प्राणायाम तकनीक आती है, जिससे शरीर, मन व आत्मा का विकास होता है।

महर्षि पतंजलि को आधुनिक योग के जनक के रूप में जाना जाता है। उन्होंने योग की सभी क्रियाओं एवं पहलूओं को एक निश्चित प्रारूप में प्रस्तुत किया था, जिसे योग सूत्र कहते हैं। इन्होने अष्टांग योग को सर्वोत्तम योग माना है। यह एक ऐसा अभ्यास है जो शारीरिक आध्यात्मिक स्वास्थ्य के 8 स्तर पर कार्य करता है। इसके अभ्यास करने से शारीरिक स्वास्थ्य तो बना रहता है साथ ही मन व विचार भी स्पष्ट, सकारात्मक एवं केंद्रित रहते हैं।

यह अष्टांग योग हैं -

1.यम (शपथ)
2.नियम (आत्म अनुशासन)
3.आसन (मुद्रा)
4.प्राणायाम (श्वांस पर नियंत्रण)
5.प्रत्याहार (इंद्रियों का नियंत्रण)
6.धारणा (एकाग्रता)
7.ध्यान (मेडिटेशन)
8.समाधि (बंधनों से मुक्ति या परमात्मा से मिलाप)

योग अभ्यास से व्यक्ति के शरीर, मन व विचार में अच्छा समन्वय होता है। योग केवल व्यायाम नहीं है, बल्कि स्वयं के साथ, विश्व और प्रकृति के साथ एकत्व खोजने का भाव है। योग हमारी जीवन शैली में परिवर्तन लाता है तथा प्राकृतिक परिवर्तनों से शरीर में होने वाले बदलावों को सहन करने में सहायक होता है ।

आधुनिक काल में स्वामी विवेकानंद ने शिकागो की धर्म संसद में योग की विशेषताओं का उल्लेख किया और पूरे विश्व को योग से परिचित कराया था। श्री बी.के.एस. अय्यंगर और बाबा रामदेव जैसे अनेक योग गुरुओं के प्रयासों का परिणाम है कि विश्व में योग का प्रचार-प्रसार हुआ। संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत के माननीय प्रधानमंत्री, श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रस्ताव पर 177 देशों के समर्थन से 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया 2015 से भारत में एवं 2016 से विश्व में इस दिन को पर्व के रूप में मनाया जाता है। सारा विश्व योग के प्रभाव को मान चुका है एवं उसे अपना रहे हैं।

एक सर्वे के अनुसार भारत में 65% व्यक्ति व्यायाम नहीं करते, 35% व्यक्ति असक्रिय है, 5% व्यक्ति मोटापे से ग्रसित है अर्थात एक बहुत बड़ी आबादी छोटी बड़ी बीमारियों से ग्रसित है। ऐसे में योग रामबाण की तरह है। मात्र आधे घंटे रोजाना योग एवं प्राणायाम द्वारा कई प्रकार की बीमारियों को दूर किया जा सकता है। इससे व्यक्ति कर्मठ एवं उसके कार्य की गुणवत्ता का विकास होता है। ''योग कर्मसु कौशलम्'' अर्थात योग से कर्मों में कुशलता आती है।

इसलिए योग का अभ्यास नित्य जीवन में करने से हमारे तन एवं मन के स्वास्थ्य में सुधार होगा एवं हमारी कार्य कुशलता का विकास होगा। इससे स्वस्थ परिवार एवं स्वस्थ समाज का निर्माण होगा और इससे देश के विकास को गति मिलेगी ।

राम एक चरित्र है

सुजीत कुमार मंडल
सहायक पर्यवेक्षक

एक दिन (संध्या के समय) सरयू के तट पर..तीनों भाइयों संग टहलते श्री राम से भरत भैया ने कहा, ''एक बात पूछूँ ? भईया !! माता कैकई ने आपको वनवास दिलाने के लिए मँथरा के साथ मिल कर जो षड्यंत्र किया था, क्या वह राजद्रोह नहीं था ?''

उनके षड्यंत्र के कारण....एक ओर राज्य के भावी महाराज और महारानी को चौदह वर्ष का वनवास झेलना पड़ा....तो दूसरी ओर पिता महाराज की दुःखद मृत्यु हुई। ऐसे 'षड्यंत्र' के लिए (सामान्य नियमों के अनुसार) तो मृत्युदण्ड दिया जाता है, फिर आपने माता कैकई को दण्ड क्यों नहीं दिया ?

राम मुस्कुराए....बोले,

''जानते हो भरत !! किसी कूल में एक चरित्रवान और धर्मपरायण पुत्र जन्म ले ले, तो उसका जीवन उसके असंख्य पीढ़ी के पितरों के अपराधों का प्रायश्चित कर देता है ।जिस 'माँ' ने तुम जैसे - महात्मा को जन्म दिया हो, उसे दण्ड कैसे दिया जा सकता है ..भरत ?''

(भरत सन्तुष्ट नहीं हुए) कहा, ''यह तो मोह है भईया और 'राजा का दण्ड विधान' मोह से मुक्त होता है। कृपया एक राजा की तरह उत्तर दीजिये कि आपने माता को दण्ड क्यों नहीं दिया ?... समझिए कि आपसे यह प्रश्न आपका अनुज नहीं, अयोध्या का एक सामान्य नागरिक कर रहा है ।''

(राम गम्भीर हो गए) ......कुछ क्षण मौन के बाद कहा, ''अपने सगे-सम्बन्धियों को किसी अपराध पर कोई दण्ड न देना ही इस सृष्टि का कठोरतम दण्ड है भरत ! माता कैकई ने अपनी एक भूल का बड़ा कठोर दण्ड भोगा है। वनवास के चौदह वर्षों में हम चारों भाई अपने-अपने स्थान से परिस्थितियों से लड़ते रहे हैं। पर माता कैकई हर क्षण मरती रही हैं।''

(अपनी एक भूल के कारण) उन्होंने अपना पति खोया, अपने चार बेटे खोए, अपना समस्त सुख-सम्मान खोया, फिर भी वे उस 'अपराध-बोध' से कभी मुक्त न हो सकीं। वनवास समाप्त हो गया तो परिवार के शेष सदस्य प्रसन्न और सुखी हो गए पर वे कभी प्रसन्न न हो सकीं। कोई 'राजा' किसी 'स्त्री' को इससे कठोर दण्ड क्या दे सकता है?

मैं तो सदैव यह सोचकर दुखी हो जाता हूँ कि मेरे कारण (अनायास ही) मेरी माँ को इतना कठोर दण्ड भोगना पड़ा।

राम के नेत्रों में जल उतर आया था, और भरत आदि भाई मौन हो गए थे।

(राम ने फिर कहा) .... ''और उनकी भूल को अपराध समझना ही क्यों भरत !!.....यदि मेरा वनवास न हुआ होता, तो संसार 'भरत' और 'लक्ष्मण' जैसे भाइयों के अतुल्य भातृ-प्रेम को कैसे देख पाता? ''मैंने तो केवल अपने माता -पिता की आज्ञा का पालन मात्र किया था, पर तुम दोनों ने तो मेरे स्नेह में चौदह वर्ष का 'वनवास' भोगा। वनवास न होता तो यह संसार सीखता कैसे.......कि भाइयों का सम्बन्ध होता कैसा है?'' भरत के प्रश्न मौन हो गए थे। (वे अनायास ही बड़े भाई से लिपट गए)!!

भाषा बनाम भाषा

वेद प्रकाश यादव
भाई- प्रेम प्रकाश यादव (लेखापाल)

भारत जैसे बहुभाषी देश में भाषा सिर्फ संचार का माध्यम नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान, परंपरा और समाज की एकता का प्रतीक भी है। भारतीय संविधान की अनुसूची 8 में हिंदी सहित 22 आधिकारिक भाषाएँ हैं। इसमें असमिया, बांग्ला, बोडो, डोगरी, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, संथाली, सिंधी, तमिल, तेलुगु और उर्दू शामिल हैं। भारतीय संविधान के भाग **XVII** में अनुच्छेद 343 से 351 तक आधिकारिक भाषाओं का उल्लेख है। भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार, देवनागरी लिपि में हिंदी, संघ की आधिकारिक भाषा होगी।

यह लेख भारत के उन मेहनतकश लोगों के बारे में हैं, जिन्हें उनकी पहचान, उनके राज्य और उनकी भाषा के लिए अपमानित किया जाता है। वो जो बिहार, यूपी, एमपी, राजस्थान, दिल्ली और हरियाणा से पेट भरने के लिए घर-परिवार छोड़कर दूर-दराज शहरों में जाते हैं। वहीं जाकर मजदूरी करते हैं। ईंट उठाते हैं, बिल्डिंग बनाते हैं, टैक्सी चलाते हैं, होटल में काम करते हैं, ढाबे में बर्तन धोते हैं। हर वो छोटा-बड़ा काम करते हैं जिससे ये शहर चलते हैं। लेकिन जब बात इज्जत की आती है, तो इन्हीं से पूछा जाता है 'तुम यहां क्या करने आए हो?' कोई इन्हें इसलिए गाली देता है क्योंकि ये उत्तर भारत से हैं। कोई इसलिए मारता है क्योंकि ये गरीब हैं और काम मांगने आए हैं और कोई इसलिए चिढ़ता है क्योंकि ये हिंदी बोलते हैं।

मराठी भाषा भारत की प्रमुख भाषाओं में से एक है। कई लोग इस भाषा का प्रयोग करते हैं। यह 1300 साल से भी पुरानी मानी जाती है। इसकी शुरुआत संस्कृत से हुई थी, बाद में यह प्राकृत और अपभ्रंश के जरिये विकसित होती गई। मराठी के व्याकरण और वाक्य रचना का आधार भी पाली और प्राकृत से लिया गया है। वर्ष 1960 में मराठी को महाराष्ट्र की आधिकारिक भाषा घोषित किया गया। वर्ष 2024 में मराठी को शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त हुआ। लेकिन मराठी भाषा को लेकर कई विवाद देखने को मिलते रहते हैं। इसी बीच हाल ही में मुंबई के मीरा रोड इलाके पर एक मिठाई दुकानदार के साथ मारपीट की गई, क्योंकि वह मराठी भाषा नहीं बोल सका।

भारत का संविधान कहता है - सबको बराबरी का हक है। न धर्म से भेद होगा, न जाति से, न भाषा से। लेकिन हकीकत क्या है? साफ है - संविधान किताब में है, जमीन पर नहीं। जो सबसे ज्यादा काम करता है, उसे सबसे कम सम्मान मिलता है। जिसने शहर खड़े किए, उसे ही बाहर का बताया जाता है।

अब सीधा सवाल उठता है -
क्या मजदूर होना जुर्म है?
क्या हिंदी बोलना गुनाह है?
क्या उत्तर भारत से आना कोई अपराध है?

यह रचना सिर्फ मजदूरों का नहीं है बल्कि उस सोच के खिलाफ है जो मेहनत को छोटा समझता है। जिस दिन इन मेहनतकश लोगों की आवाज सुनी जाएगी, उस दिन संविधान की सच्ची इज्जत होगी। वरना ये देश, कुछ लोगों का रह जाएगा - और बाकी बस चुप रह जाएंगे।

भाषा विवाद सही या गलत?

मान लीजिए, एक घर में तीन कमरे हैं और हर कमरे में एक-एक भाई अपने परिवार के साथ रहता है, तो क्या इसका ये मतलब निकाला जाएगा कि एक भाई दूसरे के कमरे में नहीं जा सकता? क्या जब वो भाई अपने ही घर के किसी और कोने में जाता है तो उसे बाहरी कहा जाएगा? अरे, घर सबका है, जमीन सबकी है, और सबसे बड़ी बात हम सब एक ही परिवार के हिस्से हैं, हम सब भारतीय हैं। हमें इस देश में कहीं भी जाकर रहने, काम करने, पढ़ने, बोलने और अपने धर्म को मानने का पूरा हक है। यही तो भारत की खूबसूरती है अलग-अलग भाषा, बोली, पहनावा और सोच के बावजूद हम सब एक साथ हैं। लेकिन कुछ लोग हैं जो इस पूरे घर को तोड़ने पर तुले हुए हैं कभी धर्म के नाम पर लड़ाते हैं, कभी जाति के नाम पर बांटते हैं और अब भाषा को हथियार बनाकर अपने ही भाई से दुश्मनी करा रहे हैं। सवाल ये नहीं है कि मराठी बोले या हिन्दी, सवाल ये है कि क्या इस देश में अब अपने ही घर में रहने के लिए भी किसी को साबित करना पड़ेगा कि वो अपना है?

हमारे पास भाषा है, शब्द हैं, अभिव्यक्ति है और हम भारतीय तो और भी भाग्यशाली हैं - हमारे पास सैकड़ों भाषाएं, बोलियां और सांस्कृतिक रंग हैं, जिनसे हम अपनी पहचान बनाते हैं। लेकिन अफसोस, आज हम उसी भाषा को लेकर एक-दूसरे से लड़ रहे हैं। जो आवाज भगवान ने हमें जोड़े रखने के लिए दी थी, उसी आवाज को हम दीवार बना रहे हैं। जो भाषा दिलों को मिलाने का जरिया थी, उसे राजनीति की आग में झोंका जा रहा है। कभी मराठी बनाम हिन्दी, कभी उत्तर बनाम दक्षिण -इंसान इंसान से इसलिए कट रहा है क्योंकि उसने अपनी सबसे बड़ी ताकत को अपना सबसे बड़ा हथियार बना लिया है।

''आता माझी सटकली व्हाई दिस कोलावेरी डी'' किसकी और क्यों?

हमने ये डायलॉग जरूर सुना होगा ''आता माझी सटकली!'' ये मराठी भाषा के शब्द हैं, व्हाई दिस कोलावेरी डी, जिसमें **''कोलावेरी'' एक तमिल शब्द है जिसका अर्थ ''जानलेवा गुस्सा'' होता है** इसे पूरे देश ने अपनाया, खासकर हिन्दी भाषी लोगों ने।

जब सिंघम फिल्म में ये डायलॉग आया, तो किसी ने थिएटर में ये नहीं कहा कि हमें मराठी क्यों सुनाया जा रहा है। किसी ने कुर्सियां नहीं तोड़ीं, किसी ने पोस्टर नहीं फाड़े, किसी ने हिंसा नहीं फैलाई। उल्टा, लोगों ने इसे सिर आंखों पर बिठा लिया और इसे हिन्दी सिनेमा के सबसे पॉपुलर डायलॉग्स में शामिल कर लिया। क्योंकि उन्हें फर्क नहीं पड़ा कि भाषा कौन सी है, उन्हें उस डायलॉग की ताकत महसूस हुआ।

हिन्दी सबसे ज्यादा सहनशील भाषा है – वो हर किसी को जगह देती है। 'खबर' जैसे कई शब्द हिन्दी के नहीं हैं, बल्कि अरबी और फारसी से आए हैं। लेकिन हिन्दी ने कभी किसी को नकारा नहीं। वो हर भाषा से कुछ न कुछ सीखती रही और आगे बढ़ती रही। इसीलिए भारत की 44% आबादी इसे अपनी मातृभाषा मानती है। जबकि मराठी को सिर्फ 6.8% लोग, तमिल को 5.7%, तेलगू को 6.7%, और पंजाबी को 2.7% लोग बोलते हैं।

अब सोचिए–जिस देश में आधे से ज्यादा लोग हिन्दी बोलते हैं, उसी देश में हिन्दी को ही खतरा बताया जा रहा है? जिस भारत में हर 15 से 20 किलोमीटर के बाद भाषाएं और बोलियां बदल जाती हैं, आज उसी भारत में हिन्दी को दूसरी भाषाओं से खतरा बताना सरासर गलत है। और वो भी ऐसे राज्यों से जहां खुद भी कई भाषाएं और बोलियां बोली जाती हैं जैसे बिहार में भोजपुरी, मगही, मैथिली। उत्तर प्रदेश में ब्रज, अवधी, बुंदेली। राजस्थान में मारवाड़ी और मालवी, हरियाणा में हरियाणवी। लेकिन फिर भी लोग हिन्दी से प्यार करते हैं और उसे अपनाते हैं।

कुछ लोगों का कहना है कि केन्द्र सरकार **Three Language** फॉर्मूले के तहत देशभर के स्कूलों पर हिन्दी भाषा को थोपना चाहती है लेकिन सबूत और गवाह बताते हैं कि ये दावा सरासर गलत है। भारत सरकार ने 2020 की ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति'' में ये कहा है कि अब से स्कूलों में बच्चों को जो तीन भाषाएं पढ़ाई जाएंगी, उनमें से किसी भी भाषा को थोपा नहीं जाएगा। बच्चे जो तीन भाषाएं स्कूलों में जाकर सीखेंगे, वो राज्य सरकारें और छात्रों की पसंद पर आधारित होंगी। यहां शर्त सिर्फ इतनी है कि इनमें से कम से कम दो भाषाएं भारत की होनी चाहिए। और एक भाषा विदेशी होनी चाहिए।

पुराने फॉर्मूला में अंग्रेजी को अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाता था लेकिन अब सरकार ने अंग्रेजी को विदेशी भाषा में डाल दिया है और अब ये छात्रों की पसंद पर निर्भर करता है कि वो **Korean, Japanese, French, German, Spanish** या अंग्रेजी भाषा में से कौन सी एक विदेशी भाषा सीखना चाहते हैं।

इसके अलावा अब बच्चों को भारत की दो भाषाएं सिखाना जरूरी हैं और इनमें हिन्दी भाषा का होना अनिवार्य नहीं है। ये राज्य सरकारें और छात्र खुद तय कर सकते हैं कि वो अपनी मातृभाषा के साथ एक और कौन सी भारतीय भाषा स्कूलों में पढ़ना चाहते हैं।

भारत में हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है, लेकिन इसे राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करने के प्रयासों ने कई बार विवाद को जन्म दिया है। विशेष रूप से तमिलनाडु और अन्य दक्षिण भारतीय राज्यों में हिंदी को अनिवार्य बनाने के प्रयासों का विरोध होता रहा है। यह विवाद केवल भाषा तक सीमित नहीं, बल्कि संघीय ढांचे और राज्यों के अधिकारों से भी जुड़ा हुआ है।

दरअसल, कई राज्यों का मानना है कि हिंदी को थोपने से उनकी भाषाएं और संस्कृतियां हाशिए पर चली जाएंगी। भारतीय संविधान ने हिंदी को केवल 'राजभाषा' का दर्जा दिया है, न कि 'राष्ट्रभाषा' का। इसलिए इसे पूरे देश में अनिवार्य बनाना अनुचित होगा। हिंदी विरोध का अर्थ यह नहीं कि हिंदी का महत्व कम किया जाए, बल्कि इसका मतलब है कि किसी भी भाषा को अनिवार्य बनाना लोकतांत्रिक मूल्यों के खिलाफ होगा।

भारत की 2011 की जनगणना के अनुसार, लगभग 44 : भारतीयों की मातृभाषा हिंदी है। हिंदी भारत सरकार की आधिकारिक भाषा भी है और यह उत्तर और मध्य भारत के राज्यों जैसे उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान और मध्य प्रदेश में व्यापक रूप से बोली जाती है। हिंदी को स्वैच्छिक रूप से अपनाने की नीति अपनाई जानी चाहिए, न कि इसे अनिवार्य बनाया जाए।

आखिर में, आपको महान स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक विनोबा भावे की एक बात याद रखनी चाहिए। वो महाराष्ट्र से थे और मराठी थे लेकिन उन्होंने कहा था कि मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूं लेकिन मेरे देश में हिन्दी की इज्जत ना हो यह मैं सह नहीं सकता।

पिता एक वटवृक्ष

प्रोसेनजीत दास
लेखापिक

तू छाया है, धूप में थके जीवन की,
तू मौन है, फिर भी कह जाता कथा अनकही।
तेरी आँखों में है आकाश की गहराई,
तेरे हाथों में है श्रम की सौंधी सच्चाई।

जब पथ अंधेरे में खो जाता है,
तेरा स्वर भीतर दीप जला जाता है।
तू चलता नहीं साथ फिर भी साथ होता है,
तेरा साया मेरे कंधों पर हर रात होता है।

तेरे त्याग की गाथा हवा से मैं सुनता,
तेरी नजर से जीवन के अर्थ को चुनता।
तू नहीं माँगता कुछ बस देता ही जाता है,
जैसे जल से भरा हुआ कोई बादल बहता जाता है।

बचपन की छोटी नांव को तूने बहाया,
हर तूफान से पहले तूने ही सम्हाला।
तूने कभी नहीं कहा, 'मैं थक गया हूँ',
पर हर रात तेरी थकन तकिए में सोई मिलती है।

पिता, तू वटवृक्ष है जड़ में गहराई,
धैर्य में हिमालय और करुणा में रवि-किरण छाई।
मैं तो बस पत्तों-सा हिलता रह जाऊँ,
पर तेरे मूल में ही जीवन की आशा पाऊँ।

दिहाड़ी मजदूर

मोहम्मद जफ़र
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सो जाते हैं फुटपाथ पे अखबार बिछा कर
मजदूर कभी नींद की गोली नहीं खाते।

ये सेर मजदूरों की जिन्दगी बखूबी बयां करता है। एक तरफ तो वे इतनी मेहनत करते हैं कि बिस्तर पर पड़ते ही नींद उन्हें अपने आगोश में ले लेती है तो दूसरी तरफ वे ऐसी मुफलिसी में जीते हैं कि अखबार को ही उन्हें अपना बिस्तर बनाना पड़ता है। मजदूर भाइयों के जीवन से जुड़े कड़वे सच को जानने से पहले जरूरी है कि पहले ये समझा जाए कि वास्तव में मजदूर कहते किसे हैं?

दोस्तों, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, के धारा 2 में **"workman"** यानी, श्रमिक या मजदूर का जिक्र आता है ''कोई भी ऐसा व्यक्ति है जो वेतन के बदले, किसी उद्योग में शारीरिक, कुशल-अकुशल तकनीकी, परिचालन या पर्यवेक्षी

रोल में काम करता है, वह मजदूर है।''खैर! ये तो हो गई सरकार की परिभाषा, लेकिन अगर हम एक आम आदमी के नजरिए से समझें तो मेहनत-मजदूरी करके या शारीरिक श्रम करने वाला व्यक्ति ही श्रमिक या मजदूर कहलाता है मकान निर्माण में ईंटे उठाने वाला, पेंटिंग-प्लास्टर करने वाला या लकड़ी का काम करने वाला व्यक्ति मजदूर है। खेतों में काम करने वाला व्यक्ति खेतिहर मजदूर की श्रेणी में आता है ''कारखाने में वेल्डिंग करने वाला, मशीन चलाने वाला व्यक्ति औद्योगिक श्रम की श्रेणी में आता है'' सड़क पर डामर बिछाने वाला, ईंट-भट्ठे में काम करने वाला, बंदरगाहों, एयरपोर्ट्स या फैक्ट्रियों में सामान लोड-अनलोड करने वाला व्यक्ति, ये सभी मजदूर हैं। पानी की टंकियों, सेप्टिक टैंकों इत्यादि की सफाई करने वाला शख्स, रेल की पटरियां बिछाने वाला व्यक्ति ये सभी मजदूर हैं।

दोस्तों, आपने मनरेगा यानी **Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Act** का नाम जरूर सुना होगा हर साल अकेले मनरेगा के अंतर्गत लगभग 15 करोड़ मजदूर रजिस्टर होते हैं। दोस्तों, 40 करोड़ का आंकड़ा मामूली नहीं होता जब आप अमेरिका की पूरी आबादी, यानी 34 करोड़ में, और 6 करोड़ लोग जोड़ते हैं तब जाकर वो भारत में मजदूरों की संख्या के बराबर होता है। शायद आप सोचें कि जब मजदूरों की संख्या इतनी अधिक है तो इनकी ताकत भी सबसे अधिक होनी चाहिए! ये जो चाहें वो मांगें सरकार से मनवा सकते हैं। लेकिन ऐसा नहीं है, क्योंकि इनमे से ज्यादातर मजदूर, संगठित और असंगठित क्षेत्र का हिस्सा हैं। ये संख्या में तो अधिक हैं पर एकजुट नहीं है। इन्हें आम बोल चाल की भाषा में दिहाड़ी मजदूर कहा जाता है यानी एक ऐसा मजदूर जिसके पास कोई जॉब गारंटी नहीं होती, वो जिस दिन काम करता है बस उस दिन का पैसा पाता है, अगले दिन की कोई गारंटी नहीं। इसे आप 'एक दिन की नौकरी' कह सकते हैं। ये कुछ ऐसा जैसेकि हर रोज प्यास बुझाने के लिए एक नया कुआँ खोदना और ऊपर से इसे कुएं को खोदते समय उनके पास हेलमेट जैसे सिंपल सेफ्टी उपकरण भी नही होता, चोट लगने पर इलाज की सुविधा भी नहीं दी जाती, ना ही आकस्मिक मृत्यु पर किसी तरह का मुआवजा गारंटीड होता है हर कुछ दिनों पर मजदूरों की मौत की खबरें सामने आती रहती हैं कभी लिफ्ट गिरने से तो कभी सीवर सफाई के दौरान तो कभी खादान में काम करते हुए मजदूरों के जिन्दगी की शमा कब बुझ जाए कहा नहीं जा सकता। एक मजदूर की जिन्दगी कितनी कठिन होती है इसका अंदाजा ऐश-ओ-आराम से रहने वाले लोगों के लिए लगाना मुश्किल है।

शहर में मजदूर जैसा दर-ब-दर कोई नहीं। जिसने सबके घर बनाए उसका घर कोई नहीं दोस्तों, एक आंकड़ा देखकर मैं हैरान रह गया। राष्ट्रीय स्तर पर जो न्यूनतम दर दिशा-निर्देश के अनुसार एक मजदूर के लिए भारत में न्यूनतम वेतन 200 रुपये प्रति दिन से भी कम निर्धारित है। 200 रु सोचिये! आप घर से पड़ोस की किराने की दुकान पे जाते हैं तो भी पांच सौ रुपये कैसे खर्च हो जाते हैं, पता ही नहीं चलता, और यहाँ करोड़ों मजदूरों को इतने कम वेतन पर काम करना पड़ता है। और उससे भी बड़े आश्चर्य की बात है कि भारत में एक तिहाई से ज्यादा मजदूर न्यूनतम मजदूरी से भी कम कमाते हैं और इसमें भी महिला मजदूरों को तो और भी कम वेतन मिलता है। लाखों बाल मजदूरों की तो बात ही छोड़ दीजिये ...अवैध रूप से उन्हें काम पर रख कर कैसे उनका शोषण किया जाता है, सिर्फ रोटी के बदले कैसे घंटो-घंटो काम करवा कर उनका बचपन बर्बाद कर दिया जाता है, ये आप सोच भी नहीं सकते।

वो कहते भी हैं न ''होने दो चरागाँ महलों में, क्या हमको अगर दीवाली है मजदूर हैं हम, मजदूर हैं हम, मजदूर की दुनिया काली है'' क्या आपने कभी सोचा है कि जिस सड़क से आप सुबह अपने घर से ऑफिस जाते हैं, वह सड़क किसने साफ की ? आपकी सोसाइटी में बाग-बगीचे संवारने वाला माली कौन है ? वो हाथ किसके हैं जिसने आपकी साड़ी पर हैण्डवर्क करके उसे इतना खूबसूरत बना दिया ? क्या आपने कभी उससे बात करने, उसका नाम जानने की कोशिश की जो रोज आपके घर से कचरा ले जाता है ? ''ये वो लोग हैं जो सूरज से पहले उठते हैं और सूरज ढलने के बाद भी काम करते हैं। फिर भी हम उन्हें देखते तक नहीं, वो हमारे लिए अवश्य हैं। जैसे वो इंसान ही न हो।

दोस्तों, क्या आप जानते हैं जीवन की सबसे बड़ी पीड़ा क्या है ? मदर टेरेसा, जिन्होंने हजारों कुष्ट रोगियों की सेवा की थी, वे कहा करती थीं कि जीवन की सबसे बड़ी पीड़ा इस तरह के रोग नहीं है, बल्कि इन रोगों के कारण उन्हें जो उपेक्षा मिलती है, वही जीवन की सबसे बड़ी पीड़ा है! और करोड़ों मजदूर हर रोज इस 'उपेक्षा' रूपी पीड़ा से गुजरते हैं। जिन मालिकों के लिए वे हर रोज बारह-बारह सोलह-सोलह घंटे काम करते हैं, वही लोग उनसे ऐसे व्यवहार करते हैं मानो जैसे की उनका कोई अस्तित्व ही नहीं है।

अपने गाँव-कस्बे में काम ना मिलने के कारण करोड़ों मजदूरों को अपना घर छोड़ना पड़ता है। अपने गाँव की मिट्टी, अपने माँ-बाप को छोड़ कर अनजाने शहर में, अनजाने लोगों के बीच जाने पर दिल कितना भारी हो जाता है ये वही समझ सकता है जिसने कभी अपना घर छोड़ा हो और विडम्बना देखिये! शहर आकर वही मजदूर ना जाने कितने लोगों के घर बनाता है, पर उस बेचारे के पास अपना कोई घर नहीं होता।

दोस्तों, आप और हम भारत-बंद का आह्वान होने पर, कर्फ्यू लगने पर, या हड़ताल होने पर खुश होते हैं कि चलो छुट्टी मिल जायेगी, एन्जॉय करेंगे, परिवार के साथ टाइम बितायंगे। लेकिन जब एक मजदूर को ये खबर मिलती है तो वह काँप उठता है कि अगर आज कहीं कोई काम नहीं मिला तो घर का चूल्हा कैसे जलेगा। मेरा परिवार खाना कैसे खायेगा! हो सकता है आप इन बातों से रिलेट नहीं कर पा रह हों, क्योंकि आपने कभी गरीबी देखी ही नहीं होगी। आप सोच ही नहीं पायेंगे कि कोई दस रूपये के लिए भी मजबूर हो सकता है। लेकिन यकीन कीजिए मेरा, ये सच है।

शायद आज मुझे देखकर भी कोई अंदाजा नहीं लगा सकता कि मैंने अपनी लाइफ में कैसे-कैसे दिन देखे होंगे पर सचमुच मैं ऐसे कई अनुभवों से गुजरा हूँ जो आपको एक-एक रुपये की कीमत का एहसास करा देते हैं।

ये बात जमाना याद रखे मजदूर हैं हम मजबूर नहीं
ये भूख गरीबी बदहाली हरगिज हमको मँजूर नहीं।

जिंदगी

निशा ध्रुव
लेखापाल

'जिंदगी' एक प्रोजेक्ट है,'रिश्ते' टारगेट है
'औलाद' इन्वेस्टमेंट है
'जवानी' कमिटमेंट है 'बुढापा' अचीवमेंट है
लेकिन 'मित्रता' सैलरी है और
'सैलरी' को कोई नही भूलता
जो वक्त के साथ बढ़ती ही जाती है
'पुरानी मित्रता' पेंशन की तरह है जो
मरने के बाद भी चलती रहती है!

चार लाइन :-
कौआ कोयल की आवाज को दबा सकता है ,
मगर खुद की आवाज मधुर नही बना सकता।
उसी तरह, निंदा करने वाला व्यक्ति सज्जन को बदनाम कर सकता है
मगर खुद सज्जन नही बन सकता है..!

माता-पिता

जो बिना आंसू बिना आवाज के रोता है वो बाप होता है।
बच्चों के किस्मत के छेद को अपनी बनियान मे पहन लेता है वो बाप होता है।
घर मे सबके लिये जूते आते है, इसके लिए बाप कि तलवे घिस जाते है।
जो अपनी आंखो में दूसरो के सपने संजोता है वो बाप होता है।

सच है, माँ हमें रखती है कोख मे नौ महीने
पर जो नौ महीने दिमाग मे ढोता है वो बाप होता है।
बाप रखवाला होता है, बाप अपनी औलाद से हार के मुस्कुराने वाला होता है
बाप करता है कहता नही, जब बाप समझ मे आ जाता है,
तब तक वह पास मे होता नही।
पसीने से माँ डुबती है तो धूप मे पिता तपता है,
तब जा के बच्चा लाड प्यार से पलता है।

माता पिता की दौलत पे घमण्ड करने से क्या फायदा
मजा तो तब है जब दौलत अपनी हो और घमंड मां-बाप करें।

फूल कभी बार-बार नही खिलते, जीवन कभी बार-बार नही मिलते
मिलने को तो बहुत से लोग मिल जाते है
लेकिन हजारों गलतियो को माफ करने वाले माँ-बाप नही मिलते।

एक सच्ची और छोटी सी बात है माँ-बाप के बिना क्या मेरी औकात है।
हजारो मुश्किलें उस अकेले सच के सामने हार गयी
जिसके सर पे माँ-बाप का हाथ है।
छाया देने वाला कभी प्रतिशोध की उम्मीद नही करता
चाहे वो पेड़ हो या माता-पिता!

खुशी की परिभाषा

सौरिश राय
कनिष्ठ अनुवादक

खुशी, एक ऐसा अहसास जिसे हर कोई पाना चाहता है। इसे महसूस करना आसान और वर्णन करना मुश्किल है। यह केवल किसी की मुस्कान की अभिव्यक्ति से महसूस किया जा सकता है। यह ऐसी भावना है जो हमारे दिलों को छू जाती है और हमें नई ऊर्जा प्रदान करती है। जिंदगी के हर मोड़ पर हम इसी अनुभव के लिए तरसते हैं। पर क्या यह खुशी कोई मंजिल है या फिर कोई सफर, क्या यह स्थायी स्थिति है या क्षणिक पल?

खुशी एक ऐसी अनुभूति है जो हमें आंतरिक शांति और संतोष से परिपूर्ण बनाती है, जो कि स्वास्थ्य के लिए भी बहुत ही जरूरी है। इसके बिना हम जिन्दगी के मुश्किलों का सामना करने में असमर्थ रह जाते हैं। यह हमें चुनौतियों से सामना करने की शक्ति देती है और उत्साह से जीने की नई प्रेरणा देती है। बिखरे जीवन को आंतरिक संतुलन यही प्रदान करती है। यह हमारे व्यक्तित्व के हर पहलू को प्रभावित करता है। इसके अलावा, खुशी भीतर से आती है और कोई भी इसे चुरा नहीं सकता। खुशी उत्तम और समृद्ध जीवन की पहचान है। हालांकि हम जानते हैं कि हम पैसे से खुशी नहीं खरीद सकते है। खुशी मूल रूप केवल मन की एक स्थिति है। यह मन के सकारात्मक होने और जीवन के उज्ज्वल पक्ष पर दृष्टिपात करने से प्राप्त हो सकती है। कोई उपलब्धि या सफलता भले ही कुछ वक्त तक हमें आनंदित करे, पर स्थायी

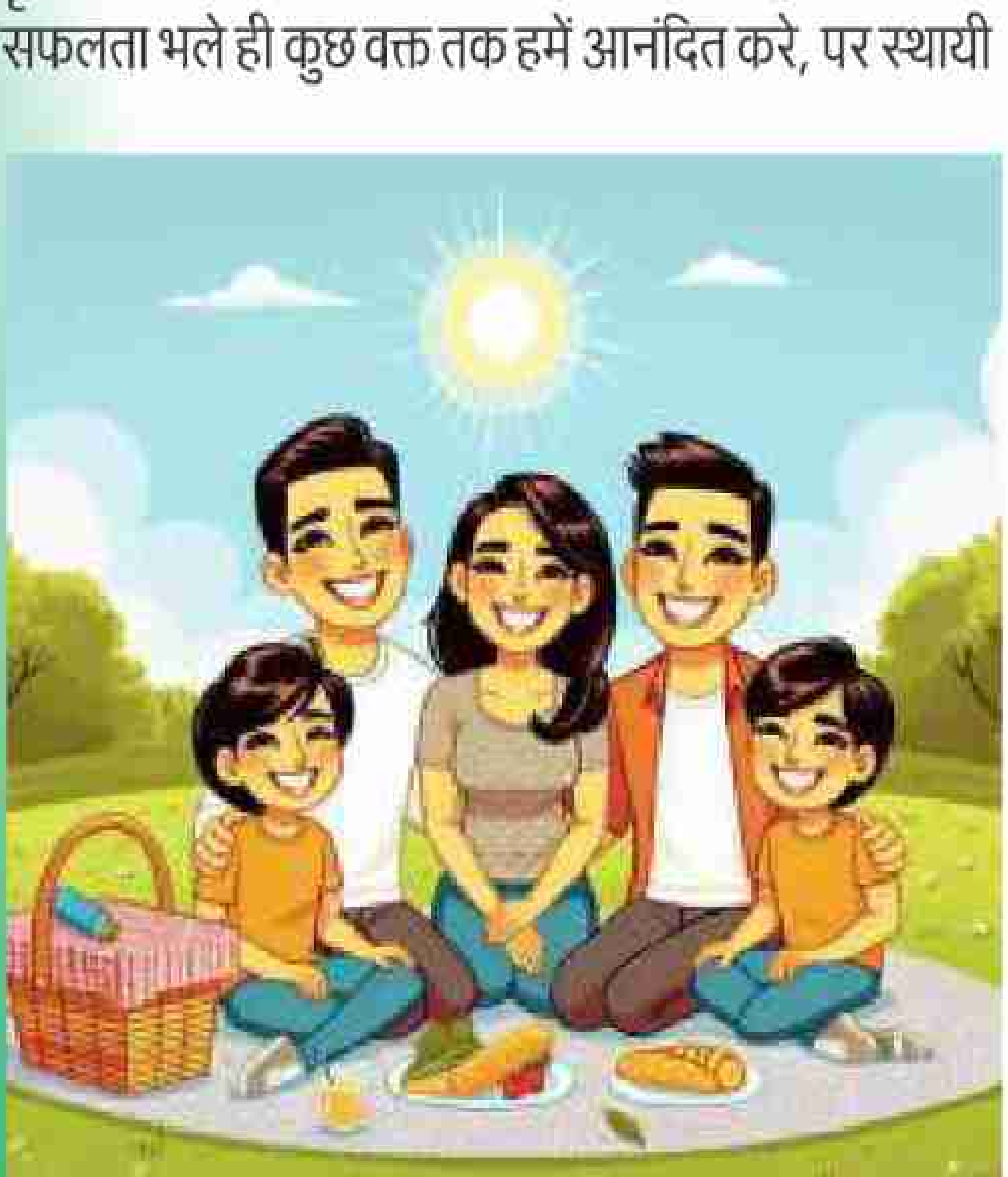

सुख एक आदत की तरह सदैव हमारा पथ प्रदर्शित करती रहती हैं। यदि हम इस स्थिति में रहने के लिये अपने मस्तिष्क को प्रशिक्षित कर सके, तो वह उसी तरह रहना सीख जाएगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि मन जो कुछ भी कहता है, हमारा दिमाग वही ग्रहण करता है। हमारे माहौल, रिश्ते, लक्ष्य, जीवन शैली आदि हमारे खुशी के स्तर को प्रभावित करती है। इनमें से कई पहलू हालात पर निर्भर होने के बावजूद, अपने उद्देश्य, सोच और दृष्टि तो हमारे काबू में रहती ही है। छोटे प्रयासों से भी हमें खुशी मिल सकती हैं।

कुछ हालिया अध्ययनों के अनुसार कुछ आदतें खुशी को आकर्षित करती हैं। विभिन्न स्थितियों में अति–उत्साहित या उदास होने के बजाय, हमे सक्रिय भावनाओं जैसे शांति और संतोष को बरकरार रख कर, निष्क्रिय भावनाओ में परिवर्तन करना चाहिए। इन भावनाओं को स्वस्थ बनाए रखना भी आसान है। इसके अलावा, हमेशा वर्तमान में रहना चाहिए। अपनी पिछली गलतियों के बारे में सोचना बंद करना चाहिए। कोई भी हर काम में पूरी तरह कुशल नहीं होता। अपने आप को दोष देना या अपने जीवन में लिए सभी बुरे फैसलों के लिये स्वयं को दोषी करार देना बंद करना होगा। अपने भविष्य के बारे में चिंता न कर, इसी पल में जीना होगा। अच्छे समय को हाथ से न जानें दे। अपने सभी पिछले क्षणों और निर्णयों को याद रखें, जिनसे खुशी मिलती है और मन को आनंदित करती है। ऐसी खुशी के क्षणों को पाने के लिये भगवान के आभारी रहें। उच्च विचार रखें। हमारे विचार हमारी वास्तविकता बनाते हैं। सकारात्मक विचार और सकारात्मक मन जीवन में सकारात्मक चीजों को आकर्षित करते हैं और नकारात्मक विचार नकारात्मक अनुभवों का एहसास कराते हैं। ऐसे लोगो से दूर रहें जो नकारात्मक बातें या आपको हतोत्साहित करते हैं। जरूरी यह है कि हम स्वयं को क्या मानते है। यदि खुद सही राह पर हैं, तो दूसरों द्वारा किया गया अपमान या आलोचना पर ध्यान देने का कोई अर्थ नहीं। प्रोत्साहित करने वाले मित्रों के साथ रहें। संभव हो तो उपलब्धियों के पश्चात स्वयं को भी शाबाशी दें, या पुरस्कृत करे। जरूरत है तो बस इतना कि जो अपने पास है इसी से संतुष्ट रहकर, स्वास्थ्य भोजन करे, नियमित रूप से व्यायाम करें एवं परोपकारी बने। इस प्रकार, खुश रहना अपना अधिकार बनायें।

छोटे दीप - बड़ी रोशनी

शुभम
लेखापरीक्षक

शहर के किनारे जहाँ संभ्रात लोग जाना भी पसंद नहीं करते थे, जहाँ शहर का दम घुटता था और गाँव की सांसे उखड़ती थी, वहां बसती थी एक दुनिया जो न शहर की थी और न गाँव की। गरीबी, दु:ख-दर्द, तंग गलियाँ और उनमें उलझा हुआ संघर्ष बस यही थी उस बस्ती की पहचान । यहीं बस्ती की दूसरी गली के बाएँ किनारे पर जानकी अम्मा और रघुवीर काका का घर था। घर कहें या बस चार दीवार और उस पर रखा टीन शेड। टीन की चादरों पर छोटे-छोटे छेद हो गए थे जिनसे धूप का घर में आना-जाना लगा रहता था। बरसात के मौसम में यही छेद छोटे-छोटे नलों का काम करते थे जिन से बरसात का पानी टपकता रहता था।

रघुबीर काका ने पिछले कई दिनों से खाट पकड़ रखा था। बुढ़ापे और बीमारी ने उनके शरीर को इस तरह तोड दिया था कि खांसी के हर दौरे के साथ लगता था कि जैसे यही आखिरी सांस हो। जानकी अम्मा एक अच्छे परिवार में रोजमर्रा के काम कर के दो वक्त की रोटी का इंतजाम करती थी किंतु पिछले सप्ताह ही वह परिवार विदेश जा बसा था और तब से अम्मा नए काम की तलाश कर रहीं थी। घर में उपलब्ध राशन से जैसे-तैसे तीन दिन गुजर गए थे लेकिन अब पिछले दो दिनों से घर में चूल्हा भी नहीं जला था। अम्मा का मन भारी था। क्या करें ? किससे मांगे ? यहाँ हर कोई अपनी लड़ाई लड़ रहा था। किसी के बच्चे भूखे थे, किसी का मालिक पैसे नहीं दे रहा था। इस बस्ती में मदद मांगना ऐसा था जैसे- डूबते जहाज पर किसी से तैरना सिखाने को कहना। अम्मा ने थोड़ी हिम्मत करके पास रहने वाले नारायण के दरवाजे को खटखटाया। दरवाजा खुलते ही जानकी अम्मा ने कांपती आवाज में कहा- ''बेटा! उनकी तबियत बहुत खराब है। दो दिन से कुछ नहीं खाया है। घर में कुछ नहीं...'' अम्मा अपनी बात पूरी कर पाती उससे पहले ही नारायण ने बीच में टोकते हुए कहा-

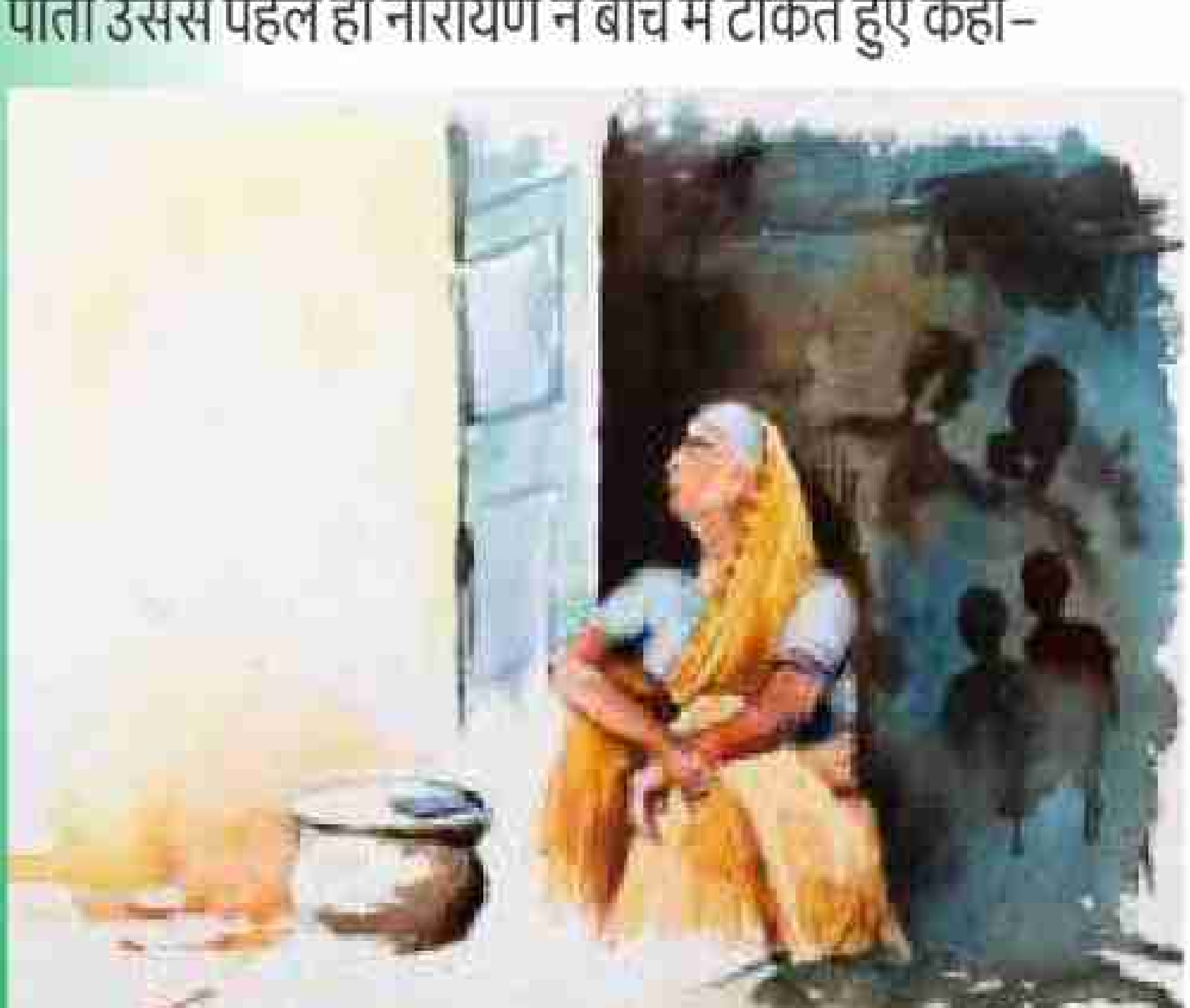

''अरे अम्मा ! हमारे घर में भी सिर्फ दो रोटी का आटा बचा है। बच्चों के लिए रखा है। मालिक ने आज की दिहाड़ी भी नहीं दी। उसकी आवाज में अफसोस था, पर बेबसी ज्यादा थी। जानकी अम्मा का दिल बैठ गया और वो चुपचाप वापस लौट आई। रात का अंधेरा गहरा गया था। काका की खांसी बढ़ गई थी। अम्मा उनके सिरहाने बैठ आंसू बहा रही थी। वो सोच रही थीं कि यह वही समाज है जहाँ लोग मरते हुए को देख कर भी रास्ता बदल लेते है जहाँ दर्द दूसरे के लिए बस एक तमाशा बन जाता है और जहाँ रिश्ते जरुरत के धागों से बुने जाते हैं। क्या इंसानियत सिर्फ मतलब के सहारे टिकती है?

तभी दरवाजे पर एक दस्तक हुई। अम्मा चौंकी। कौन होगा इस वक्त ? उन्होंने दरवाजा खोला। सामने झुकी हुई कमर वाली शकुंतला खड़ी थी जो रोज चौराहे पर सब्जी बेचती थी। शंकुतला के हाथ में एक डिब्बा था। उसने डिब्बा आगे बढ़ाते हुए कहा, जानकी बहन, सुना है रघुबीर भाई की खांसी बढ़ गई है। मेरे चूल्हे पर आज दाल बनी है और दो रोटी भी सेंकी है, वही लाई हूँ। जानकी अम्मा सन्न रह गई।

शकुंतला जिसकी खुद की बेटी पिछले वर्ष भुखमरी के कारण ईश्वर को प्राप्त हो गई थी, जिसकी आंखों में हमेशा खालीपन रहता था वो उसे खाना देने आई थी। अम्मा ने आवाज दबाते हुए कहा, 'शकुंतला तेरा भी अपना घर..। शकुंतला ने डिब्बा थमाते हुए कहा- ''हम सब यहाँ एक हैं बहन। आज तेरी बारी है कल हो सकता है मेरी हो।'' वो बिना कुछ और बोले चुपचाप चली गई। अम्मा ने डिब्बा खोला। गरम - गरम दो रोटी और एक कटोरी दाल। यह सिर्फ खाना नहीं था बल्कि किसी के अपने हिस्से से काटी हुई जिन्दगी थी ।

जैसे ही अम्मा ने दरवाजा बंद किया फिर एक दस्तक हुई। इस बार मंगल था, जो दिन भर रिक्शा चलाता था। उसके हाथ में एक पुड़िया थी। पुड़िया आगे करते हुए मंगल बोला, आज सवारी कम थी पर उससे जो थोड़ा बहुत बचा उससे रघुवीर काका के लिए खांसी की दवाई ले आया हूँ। मंगल की कमीज पसीने से भीगी थी। चेहरे पर थकावट थी परंतु आंखों में अलग सी चमक थी। अम्मा ने नम आंखों से आंसुओं को रोकते हुए दवा ले ली और मंगल भी बिना रुके चला गया।

अम्मा दरवाजे पर खड़ी थी। हाथ में खाने का डिब्बा और दवाई की पुड़िया पकड़े। बाहर अंधेरा घना हो गया था, पर अम्मा के मन में अजीब सी रोशनी फैल रही थी। यह रोशनी किसी बड़ी धन-दौलत की नहीं बल्कि, यह इंसानियत के उन छोटे- छोटे दियों की रोशनी थी जिन्हें इस अंधेरी बस्ती के लोगों ने अपने दिलों में जलाया था।

कार्यालय में रंगोली : एक जीवंत परंपरा

रंगोली सजावट

हमारे कार्यालय में हम विभिन्न अवसरों पर उत्साह और रचनात्मकता के साथ जश्न मनाते हैं। इन जश्नों का एक सब से प्रतीक्षित और आनंद दायक पहलू रंगोली सजाना है, जहां हमारे प्रतिभाशाली महिला कर्मचारी अपनी कलात्मक कौशल का प्रदर्शन करते हैं। जटिल डिजाइन, जीवंत रंग, और सूक्ष्म पैटर्न के साथ, हमारे महिला कर्मचारी आश्चर्यजनक रंगोली बनाते हैं जो कार्यालय परिसर को सजाते हैं। ये क्षणिक कला कृतियाँ न केवल त्यौहार के माहौल को बढ़ाती हैं, बल्कि हमारे महिला कर्मचारियों की रचनात्मकता और टीम वर्क को भी प्रतिबिंबित करती हैं। नये साल के दिन ऑडिट दिवस, गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, कैरम प्रतियोगिता और बैडमिंटन प्रतियोगिता आदि पर रंगोली हमारे कार्यालय समारोह का एक अभिन्न अंग है। हमारे महिला कर्मचारी इन सुंदर पैटर्नों को डिजाइन करने में अपना दिल डालते हैं, अक्सर अवसर से संबंधित थीम को शामिल करते हैं।

रंगोली बनाना एक परंपरा बन गई है, जिसमें महिला कर्मचारी अपनी कलात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन करने के लिए उत्सुकता से प्रतीक्षा करते हैं। यह साझा हितों पर बंधने, एक दूसरे की रचनात्मकता की सराहना करने और हमारे कार्यालय वातावरण में रंग भरने का एक शानदार तरीका है। हम अपने कार्यालय पत्रिका में इन आश्चर्य जनक रंगोली को प्रदर्शित करने पर गर्व महसूस करते हैं, जिससे हर कोई इन जश्नों के जादू को पुन: अनुभव कर सके। यह रचनात्मकता और सौहार्द का प्रमाण है जो हमारी कार्यालय संस्कृति को परिभाषित करता है।

हमारे कार्यालय की जीवंत भावना को कैप्चर करते हुए, ये रंगोली हमें याद दिलाती हैं कि कला और जश्न की कोई सीमा नहीं है यहा तक की कार्य स्थल में भी नहीं!

सरिता
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार, लेखापरीक्षा सेवानिवृत्ति एवं पदोन्नती विवरण

सं.	नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पद	विवरण
1	आशा श्याम	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	सेवानिवृत्ति दिनांक- 03.02.2025
2	हरीश चंद्र मार्कंडेय	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	सेवानिवृत्ति दिनांक- 31.03.2025
3	सुनील अमर भालाधारे	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	सेवानिवृत्ति दिनांक- 31.07.2025
4	अनिल कुमार जयसवाल	सहायक पर्यवेक्षक	पदोन्नती दिनांक- 01.01.2025 सेवानिवृत्ति दिनांक- 31.07.2025
5	जीतेन्द्र कुमार यादव	सहायक पर्यवेक्षक	पदोन्नती दिनांक- 01.01.2025
6	रोशन तिग्गा	सहायक पर्यवेक्षक	पदोन्नती दिनांक- 01.01.2025
7	रिषभ तिवारी	सहायक पर्यवेक्षक	पदोन्नती दिनांक- 01.01.2025
8	हिमांशु वर्मा	सहायक पर्यवेक्षक	पदोन्नती दिनांक- 01.01.2025
9	त्रिवेणी ध्रुव	सहायक पर्यवेक्षक	पदोन्नती दिनांक- 01.01.2025
10	रमेश कुमार सिदार	सहायक पर्यवेक्षक	पदोन्नती दिनांक- 01.01.2025
11	हिरेन्द्र कुमार अग्रवाल	सहायक पर्यवेक्षक	पदोन्नती दिनांक- 01.01.2025
12	प्रदीप टोप्पो	सहायक पर्यवेक्षक	पदोन्नती दिनांक- 01.01.2025
13	देवराज	लेखापरीक्षक	पदोन्नती दिनांक- 07.03.2025
14	ललित कुमार बघेल	लेखापरीक्षक	पदोन्नती दिनांक- 07.03.2025
15	हीरा राम टंडन	लिपिक	पदोन्नती दिनांक- 07.03.2025

दिनांक 01.08.2024 से 31.07.2025 तक कार्यालय में पदोन्नति की विवरण

सरल क्रमांक	नाम	पदोन्नति पद	पदोन्नति दिनांक
1	श्री व्ही. सीतारामू	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	01.08.2024
2	श्री यशवीर	लेखापाल	01.01.2025
3	श्री लक्ष्मण सिंह	लेखापाल	01.01.2025
4	श्री प्रेम प्रकाश यादव	लेखापाल	01.01.2025
5	श्री पवन कुमार	लेखापाल	01.01.2025
6	श्री रमेश	लेखापाल	01.01.2025
7	श्री रमाकांत दुबे	लेखापाल	01.01.2025
8	श्री डी. भास्कर राव	लेखापाल	01.01.2025
9	सुश्री हेमवती भगत	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2025
10	श्री सुनील कुमार पटेल	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2025
11	श्री पी.डी. मोहाडीकर	पर्यवेक्षक	04.02.2025
12	श्री शशि रंजन कुमार	सहायक लेखा अधिकारी	25.04.2025
13	श्री के. एस. बुराडे	पर्यवेक्षक	01.05.2025
14	श्री एम. व्ही. राव	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	01.06.2025
15	श्री डी. व्ही. स्वामी	सहायक पर्यवेक्षक	01.06.2025

दिनांक 01.08.2024 से 31.07.2025 तक कार्यालय में सेवानिवृत्ति की विवरण

सरल क्रमांक	नाम	सेवानिवृति पद	सेवानिवृति दिनांक
1	श्री डी. यू. पराते	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.07.2024
2	श्री सुनील कुमार बघेल	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.07.2024
3	श्री संजय कुमार गजभिए	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.09.2024
4	श्री वसंत जगनराव रम्भाड	सहायक लेखा अधिकारी	31.12.2024
5	श्री श्याम कुमार ए.	पर्यवेक्षक	31.01.2025
6	श्री जी. तारकेश्वर राव	वरिष्ठ लेखापाल	28.02.2025
7	श्री भीमराव सोमाजी बान्धेकर	पर्यवेक्षक	30.04.2025
8	श्री अनिल महादेव पारखेडकर	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.05.2025
9	श्री दीपक राजपूत	सहायक पर्यवेक्षक	31.05.2025
10	श्री बी. मोहन कुमार	वरिष्ठ निजी सचिव	30.06.2025
11	श्री राजेंद्र कुमार दामोदर फुले	सहायक पर्यवेक्षक	30.06.2025
12	श्री नारायण राव बिसेन	पर्यवेक्षक	31.07.2025
13	श्री गोपाल राव लिमजे	पर्यवेक्षक	31.07.2025

आपके प्रशंसा पत्र

महालेखाकार का कार्यालय (हक एवं लेखा), त्रिपुरा, अगरतला

14 DEC 2024

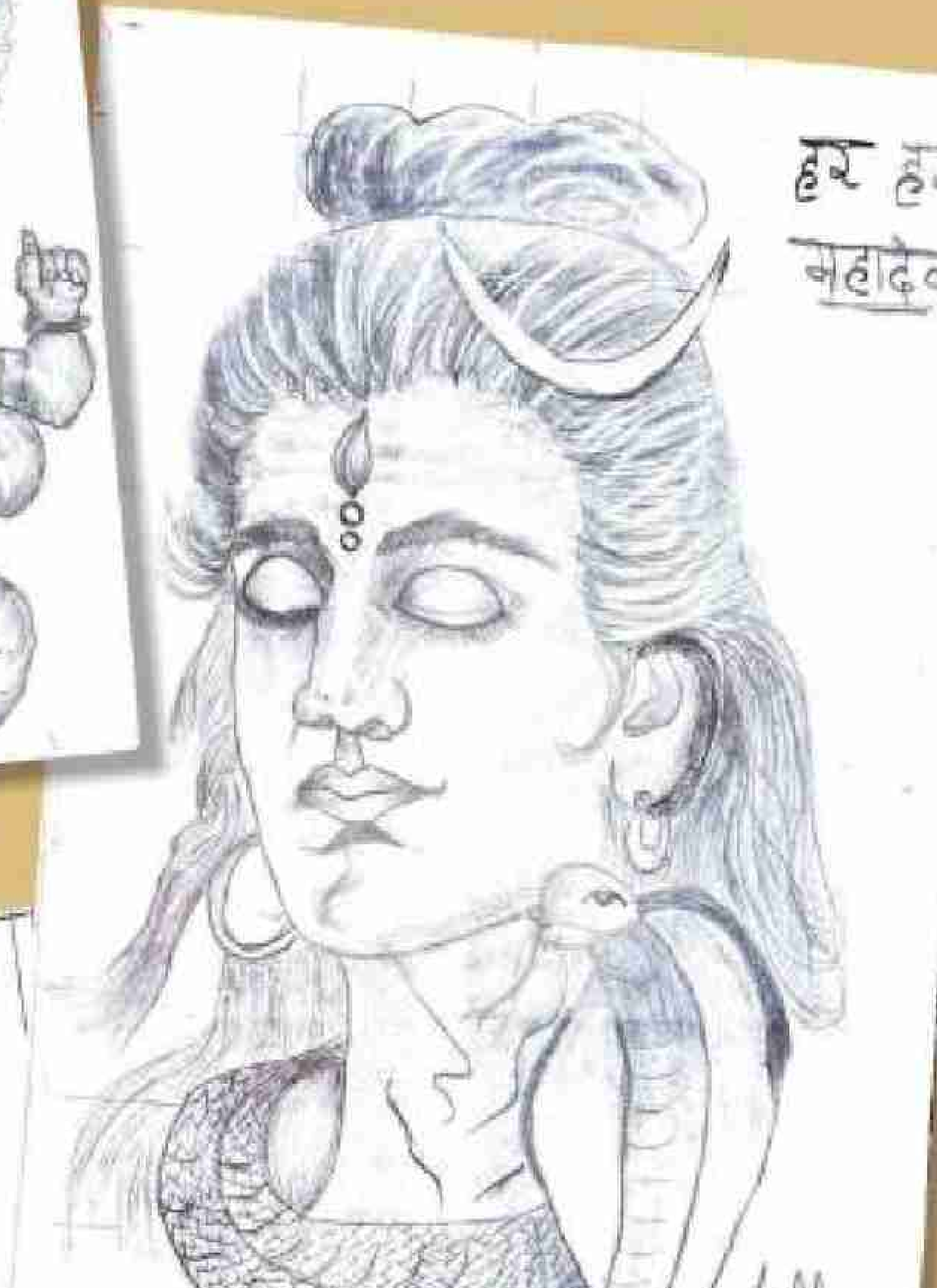

लुभावनी साहू
पुत्री - श्रीमती दिव्या साहू
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी

OPERATION SINDOOR

सुहागन की प्रतिज्ञा, हर नारी का सम्मान

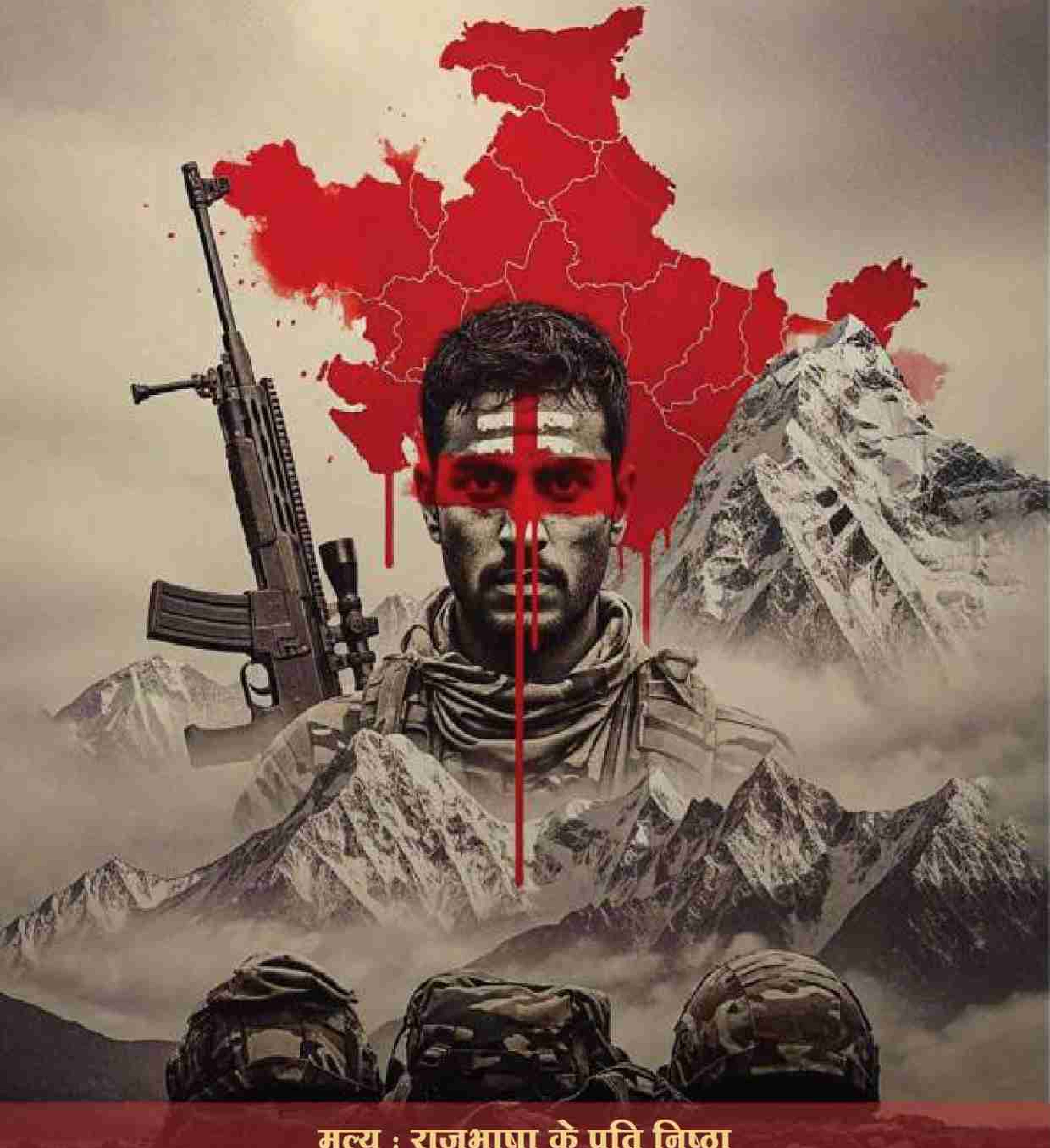

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा